बीओआई वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

मार्च, 2026

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिनांक 23 जनवरी 2026 को आंचलिक कार्यालय, वाराणसी का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिनांक 19 फरवरी 2026 को आंचलिक कार्यालय, पुणे का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिनांक 06 मार्च 2026 को आंचलिक कार्यालय, अमृतसर का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री राजीव मिश्रा

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री बिश्वजित मिश्र

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अनूप पी., अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, सी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

बैंकिंग में राजभाषा का प्रगामी प्रयोग : कामकाज में स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग का महत्व 08

महिला सशक्तिकरण: भारतीय समाज में बदलती भूमिका 09

पासबुक 11

हरित बैंकिंग का बढ़ता महत्व 12

ध्यान की मेरी यात्रा : परिस्थितियाँ नहीं, दृष्टिकोण बदला 14

ख़ूबसूरत सफ़र... 15

आधुनिकता: सच या दिखावा 17

चेरी ब्लॉसम 19

विश्व हिंदी दिवस 2026 का आयोजन 20

विश्व कविता दिवस - 21 मार्च 27

स्वस्थ जीवनचर्या : बेहतर जीवन की कुँजी 31

सफर, सुकून और सस्पेंस: '307.47' की अनोखी दुनिया 32

परोपकार 34

आधी चाय और पूरा सपना 35

बरसो पानी 37

कैशलेस अर्थव्यवस्था - अवसर और चुनौतियां 38

चित्र काव्य प्रतियोगिता 39

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के मार्च 2026 अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

गत तिमाही बैंक के व्यावसायिक प्रदर्शन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। इस उपलब्धि के लिए 'स्टार परिवार' के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। इस वित्तीय वर्ष में हमारे बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हेतु कई पुरस्कार जीते हैं। अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की बढ़ती सहभागिता हमारे लिए गर्व का विषय है। यह हर्ष का विषय है कि 'आशीर्वाद' नामक सामाजिक संस्था द्वारा 'बीओआई वार्ता' को श्रेष्ठ पत्रिका के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में बैंक द्वारा तिमाही हिंदी गृह पत्रिका 'बीओआई वार्ता' का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में इस अंक में महिला कर्मचारियों की रचनाओं को विशेष प्राथमिकता दी गई है। यह एक अत्यंत सराहनीय पहल है।

इस अवसर पर मैं पदोन्नत सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं उनके नव दायित्वों के सफल निर्वहन की कामना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि हम सभी मिलकर वित्तीय वर्ष 2026-27 में बैंक को विकास, उत्कृष्टता और नई उपलब्धियों की दिशा में अग्रसर करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे इस बात की अत्यंत खुशी है कि बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका 'बीओआई वार्ता' का मार्च 2026 अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

यह तिमाही भाषा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। 10 जनवरी 2026 को विश्व हिंदी दिवस के साथ महाराष्ट्र राज्य में स्थित अंचलों द्वारा मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़े का आयोजन किया गया। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस तथा 21 मार्च को विश्व कविता दिवस का पालन किया जाता है। मुझे खुशी है कि विश्व कविता दिवस को मान्यता देते हुए 'बीओआई वार्ता' पत्रिका में कुछ पृष्ठ हमारे स्टाफ रचनाकारों द्वारा लिखित कविताओं को समर्पित किया गया है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय सरकार/नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने हेतु प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिससे राजभाषा हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ सके। यह परिपत्र के रूप में आप तक प्रेषित किया गया है। भारत सरकार की अपेक्षाओं को पूरा करना हमारा उत्तरदायित्व है।

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग की ओर से 09 व 10 अप्रैल, 2026 को उदयपुर में आयोजित समारोह में बैंक को 'ख' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके लिए आप सभी को बधाई। मुझे आशा है कि आगामी वित्तीय वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन में बैंक का प्रदर्शन और बेहतर होगा।

इस मंच के माध्यम से हाल ही में पदोन्नत सभी स्टाफ अधिकारियों को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। आइए, हम संकल्प लें कि नए वित्तीय वर्ष 2026-27 में अपने बैंक को नई ऊँचाई की ओर लेकर जाएंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

मुख्य महाप्रबंधक की कलम से

प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा तिमाही हिंदी गृहपत्रिका 'बीओआई वार्ता' के मार्च, 2026 के नवीनतम अंक का प्रकाशन हो रहा है।

सर्वप्रथम, नए वित्तीय वर्ष के आरंभ में, मैं बैंक को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग से प्राप्त द्वितीय पुरस्कार हेतु आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि इस वित्तीय वर्ष के दौरान हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा।

बीओआई वार्ता के नियमित प्रकाशन से स्टाफ रचनाकारों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए मंच मिलता है। मुझे अत्यन्त खुशी है कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला स्टाफ सदस्य के आलेखों को शामिल किया गया। उक्त तिमाही में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न अंचलों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ देखने को मिली हैं। साथ ही, महाराष्ट्र राज्य के सभी अंचलों ने मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़े का पालन किया गया। यह हमारी भाषा के प्रति गंभीरता दर्शाती है।

बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों में यह भावना जाग्रत होनी चाहिए कि वे देश की राजभाषा हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषा में कार्य करके अपने आपको गौरवान्वित महसूस करें। ग्राहक की भाषा में वार्तालाप करके उसकी आवश्यकता की पूर्ति एवं उसकी समस्या का तत्परता से समाधान करना ही बैंकिंग की आवश्यकता है। बैंकिंग में सहज एवं सरल भाषा का उपयोग करते हुए कारोबार वृद्धि में सक्रिय योगदान किया जा सकता है जिसका सकारात्मक दूरगामी प्रभाव रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(अभिजीत बोस)
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी गृहपत्रिका 'बीओआई वार्ता' के मार्च 2026 तिमाही अंक को आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यह अंक इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसके साथ हमारे इस वित्तीय वर्ष का समापन भी हो रहा है। साथ ही, इसी तिमाही में विश्व हिंदी दिवस तथा नारी शक्ति के अटूट साहस, समर्पण और सामर्थ्य की याद दिलाने वाला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन भी हमने अत्यंत भव्य रूप से किया।

आज के बदलते परिवेश में महिलाओं ने बैंकिंग से लेकर साहित्य तक, अपनी लेखनी और दृष्टि से नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। इस अंक में हमने विशेष रूप से महिला लेखिकाओं और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को वरीयता दी है। मधुमिता कर द्वारा रचित 'बैंकिंग में राजभाषा का प्रगामी प्रयोग : कामकाज में स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग का महत्व' शीर्षक आलेख में बैंकिंग में राजभाषा हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। कलारानी पालपांडियन का आलेख 'महिला सशक्तिकरण : भारतीय समाज में बदलती भूमिका' समाज में स्त्रियों की प्रगति की ओर संकेत करता है, काजल उल्लास कदम की 'पासबुक' एक रोचक एवं मनोरंजक कहानी है। विश्व कविता दिवस के उपलक्ष्य में कविताओं के लिए विशेष स्थान भी प्रदान किया गया है।

हम महिला लेखिकाओं की सक्रिय भागीदारी का हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपकी रचनात्मकता इसी प्रकार 'बीओआई वार्ता' की शोभा बढ़ाती रहेगी। संपादकीय टीम की ओर से हमारे स्टार परिवार के स्टाफ सदस्यों से यह भी निवेदन है कि वे अपनी सृजनात्मक गतिविधियाँ समय-समय पर प्रेषित करके हमारी 'बीओआई वार्ता' को और समृद्ध करने का प्रयास करते रहिए।

नए वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए, मैं सभी स्टाफ सदस्यों से 'बीओआई वार्ता' का यह अंक पढ़कर अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया हमें अवगत कराने का आग्रह करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

बिश्वजित मिश्र

(बिश्वजित मिश्र)
महाप्रबंधक

बैंकिंग में राजभाषा का प्रगामी प्रयोग : कामकाज में स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग का महत्व

मधुमिता कर
वरिष्ठ प्रबंधक
बारिपदा अंचल

भारत एक विशाल और बहुभाषी देश है, यद्यपि हिंदी हमारे राज्य की राजभाषा नहीं है, फिर भी यह भारत संघ के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार आधिकारिक भाषा है। यहाँ विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, परंतु सभी भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी हिंदी है। बैंकिंग क्षेत्र, जो सीधे आम जनता से जुड़ा हुआ है, उसमें हिंदी का प्रगामी प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

बैंकिंग में राजभाषा का प्रगामी प्रयोग : ग्राहकों को भेजे जाने वाले एसएमएस, एटीएम पर्चियाँ तथा मोबाइल बैंकिंग ऐप्स में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। कई बैंकों ने अपनी सुविधा के अनुसार भाषा चयन की प्रक्रिया अपनाई है। यह राजभाषा का वास्तविक और प्रभावी प्रगामी प्रयोग है।

कर्मचारियों की भूमिका :-

- कर्मचारियों को हिंदी में पत्राचार, नोटिंग और ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया जाता है।
- विश्व हिंदी दिवस और हिंदी माह मनाकर कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और जागरूकता उत्पन्न की जाती है ।

तकनीक और राजभाषा : आज का युग डिजिटल युग है। अब बैंकिंग सॉफ्टवेयर भी हिंदी समर्थित हो गए हैं। कई प्रकार के ऐप्स के माध्यम से हिंदी आसानी से सीखी जा सकती है। इनमें 'लीला ऐप' एक उदाहरण है, जिसके माध्यम से आप पंद्रह भारतीय भाषाओं में हिंदी बहुत आसानी से सीख सकते हैं।

सरकारी कामकाज में स्वदेशी भाषाओं का महत्व : जब सरकारी कार्य जनता के भाषा में होते हैं, तो योजनाओं और नीतियों की सही जानकारी आम जनता तक आसानी से पहुँचती है। स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग से प्रशासन और नागरिकों के बीच की दूरी कम होती है। इससे पारदर्शिता बढ़ती है और लोकतंत्र मजबूत होता है।

चुनौतियाँ और समाधान : राजभाषा हिंदी के प्रयोग में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे तकनीकी शब्दों की कठिनाई, अंग्रेजी की पुरानी कार्यसंस्कृति और कर्मचारियों का संकोच। इन समस्याओं का समाधान निरंतर प्रशिक्षण, सरल शब्दावली के प्रयोग, द्विभाषी या त्रिभाषी नीति तथा सकारात्मक प्रोत्साहन के माध्यम से किया जा सकता है।

राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सरकारी प्रयास : भारत सरकार द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत यह स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि सरकारी कार्यालयों, बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए।

बैंको में हिंदी के प्रचार-प्रसार की गतिविधियाँ : बैंकों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जैसे हिंदी माह के दौरान हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद और हिंदी गीत गायन जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें बैंक के स्टाफ बड़े हर्ष और उल्लास के साथ सहभागिता करते हैं। कहीं-कहीं ये प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन माध्यम से भी आयोजित की जाती हैं, ताकि शाखाओं के स्टाफ भी भाग ले सकें जिससे राजभाषा हिंदी के विकास में कोई कमी न रह जाए।

वित्तीय समावेशन में राजभाषा की भूमिका : वित्तीय समावेशन का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना है। जन-धन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता समूह और बीमा योजनाएँ तभी सफल हो सकती हैं, जब हम हिंदी को तरजीह देंगे।

युवा वर्ग और राजभाषा : आज का युवा वर्ग तकनीक से जुड़ा हुआ है। यदि बैंकिंग और सरकारी सेवाएँ हिंदी में डिजिटल रूप में उपलब्ध हों, तो युवा वर्ग भी हिंदी को एक आधुनिक और उपयोगी भाषा के रूप में अपनाएगा।

निष्कर्ष : अंत में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बैंकिंग में राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि जन सेवा का एक सशक्त माध्यम है।

"हिंदी है हम सबकी भाषा,
इसमें ही है, देश की आशा।"

■ ■

महिला सशक्तिकरणः भारतीय समाज में बदलती भूमिका

कलारानी पालपांडियन
प्रबंधक - आई.टी.
मदुरै अंचल

"मैंने भारतीय महिलाओं को रसोई से बाहर निकाला है, अब यह देखना आपका काम है कि वे वापस वहाँ न जाएँ।"

- महात्मा गांधी

जैसे-जैसे भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रख रहा है, महिला सशक्तिकरण इस चुनौती के केंद्र में है। महिला सशक्तिकरण और सामाजिक-आर्थिक विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। आधुनिक समय में 'सशक्तिकरण' एक प्रचलित शब्द है और इसका मूल अर्थ सत्ता और अधिकार का विकेंद्रीकरण है। इसका उद्देश्य निर्णय लेने की प्रक्रिया में समाज के वंचित वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करना है। सामान्य शब्दों में, सशक्तिकरण का अर्थ है 'बेजुबानों को आवाज़ देना'।

परंपरागत रूप से भारतीय समाज में महिलाओं की मुख्य भूमिका संतानोत्पत्ति, बच्चों का पालन-पोषण और घर के प्रबंधन तक सीमित रही है। पुरुष को ही परिवार का पालनहार (Breadwinner) माना जाता रहा है। लेकिन क्या शुरू से ही महिलाओं की स्थिति ऐसी ही थी? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें महिलाओं के इतिहास पर नज़र डालनी होगी।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आए हैं।

प्राचीन काल : प्राचीन भारत में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था, जो घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियों की उपस्थिति से स्पष्ट होता है। महिलाओं को मानव जीवन की 'जननी' (Progenitor) के रूप में सम्मानित स्थान दिया गया था।

मध्य काल : हालांकि, समय के साथ और पितृसत्तात्मक समाज के उदय के कारण महिलाओं की स्थिति में गिरावट आती गई। समाज में पुरुषों को श्रेष्ठ स्थान दिया गया, जिन्होंने मानव जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करना शुरू कर दिया। मध्य काल में पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के कारण महिलाओं की स्थिति और अधिक कमजोर हो गई।

सुधार का सवेरा (19वीं शताब्दी) : 19वीं शताब्दी की शुरुआत में राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, केशव चंद्र सेन और अन्य समाज सुधारकों के नेतृत्व में सुधार आंदोलनों की एक लहर उठी। इन आंदोलनों ने महिलाओं से जुड़ी सामाजिक बुराइयों को उजागर किया और उन्हें सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सती प्रथा पर रोक और विधवा पुनर्विवाह अधिनियम जैसे कदमों ने महिलाओं के जीवन पर पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पकड़ को कमजोर किया और महिलाओं को एक स्वतंत्र पहचान देने का प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद का युग

स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं को पुरुषों के नियंत्रण से मुक्त करने के लिए एक नए युग की शुरुआत की। भारतीय संविधान ने महिलाओं को ऐसा वातावरण देने का वादा किया, जहाँ वे राष्ट्र और समाज की विकास प्रक्रिया में समान भागीदार बन सकें। हालांकि, इसे हकीकत में बदलना चुनौतीपूर्ण था क्योंकि इसका सामना धार्मिक और सामाजिक कट्टरताओं से हुआ।

आज 21वीं सदी में भी समाज में महिलाओं की स्थिति चिंता का विषय बनी हुई है। दुर्भाग्यवश, उन्हें अभी भी 'सशक्त' बनाने की आवश्यकता है। महिलाएँ हर कदम पर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। 'लैंगिक हिंसा' (Gender Violence) इनमें से एक प्रमुख समस्या है, जो घरेलू हिंसा के रूप में सामने आती है। घरेलू हिंसा के साथ-साथ, पुरुषों में शराब की लत भी महिलाओं के खिलाफ हिंसा के सबसे सामान्य कारणों में से एक है।

शहरी महिलाएँ भी चुनौतियों से अछूती नहीं हैं। यदि भारतीय शहरी महिलाओं की स्थिति पर ध्यान दें, तो वह भी गंभीर है।

कार्यबल के आंकड़े: 2011 की जनगणना के अनुसार, महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर मात्र 25.5% है। भारत में महिला श्रम बल भागीदारी (FLFP) दर दुनिया में सबसे कम दरों में से एक है।

दोहरा बोझ: इसका एक मुख्य कारण महिलाओं पर घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ है। पुरुषों द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग न करने के कारण महिलाओं पर 'दोहरा बोझ' (Double Burden) पड़ता है।

कार्यस्थल की समस्याएँ : यह एक स्थापित तथ्य है कि समान योग्यता होने के बावजूद महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है। इसके अलावा, कार्यस्थल पर व्यापक रूप से होने वाला यौन उत्पीड़न भी बड़ी बाधा है।

बलात्कार, हिंसा और उत्पीड़न का सबसे बर्बर रूप है, जो महिलाओं की शारीरिक अखंडता और आत्म-सम्मान को नष्ट कर देता है। गिरता हुआ बाल-लिंगानुपात और ऑनर किलिंग (सम्मान के नाम पर हत्या) जैसी घटनाएँ उस सांस्कृतिक जड़ता की ओर इशारा करती हैं, जो आज भी महिलाओं की स्वतंत्रता का गला घोंट रही हैं।

सशक्तिकरण की राह

महिला को कौन सशक्त करेगा? क्या उन्हें किसी सहारे की जरूरत है? जब तक महिला स्वयं को मजबूत नहीं करती, कोई उसकी मदद नहीं कर सकता। उसे खुद खड़ा होना होगा। महिलाओं के लिए बढ़ते आर्थिक अवसरों ने उनकी पारंपरिक भूमिका को सीधे चुनौती दी है। शिक्षित और सशक्त महिलाओं ने परिवार के पालनहार की जिम्मेदारी भी संभाली है। 21वीं सदी की महिलाओं ने अपनी बेड़ियाँ तोड़ दी हैं और हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। इसके फलस्वरूप भारत सहित पूरी दुनिया में महिलाओं का ऐसा सशक्तिकरण हुआ है जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। हालाँकि, वैश्वीकरण (Globalization) के प्रभाव से शहरी महिलाओं में एक नया आत्मविश्वास और मुखरता आई है। समय के साथ अधिक से अधिक महिलाएँ घर की दहलीज से बाहर निकलकर सवैतनिक रोजगार (Gainful Employment) अपना रही हैं।

"यदि किसी समाज की वास्तविक प्रगति को परखना हो तो वहाँ की महिलाओं की स्थिति को देखना चाहिए।" यह कथन महिला सशक्तिकरण के महत्व को स्पष्ट करता है। आज महिलाएँ डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, पायलट, प्रशासक और सैनिक बन रही हैं। कार्यबल में उनकी भागीदारी ने उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति भी सुदृढ़ हुई है।

आर्थिक स्वतंत्रता से महिलाओं को निर्णय लेने की शक्ति मिलती है और वे शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठा पाती हैं। आज राजनीति में भी महिलाएँ अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। पंचायतों में आरक्षण ने ग्रामीण महिलाओं को नेतृत्व का अवसर दिया है। अनेक महिलाएँ मुखिया, सरपंच और विधायक बनकर समाज में बदलाव ला रही हैं। यह केवल प्रतिनिधित्व नहीं, बल्कि सोच में परिवर्तन का संकेत है। सामाजिक स्तर पर भी महिलाएँ कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज़ उठा रही हैं - चाहे वह घरेलू हिंसा हो, यौन उत्पीड़न हो या बाल विवाह।

स्वयं सहायता समूहों, महिला उद्यमिता और सरकारी योजनाओं जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ", "स्टैंड-अप इंडिया", "मुद्रा योजना" आदि ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद की है।

संवैधानिक और कानूनी सुरक्षा

अनुच्छेद 39(a) और (d): आजीविका की सुरक्षा और स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करता है।

मातृत्व लाभ अधिनियम (1961): 2017 के संशोधन द्वारा सवैतनिक अवकाश बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दिया गया।

समान पारिश्रमिक अधिनियम (1976): कार्यस्थल पर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए।

निष्कर्ष और दृष्टिकोण

महिला सशक्तिकरण किसी एक वर्ग का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे समाज की प्रगति का आधार है। जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तो परिवार मजबूत होता है, समाज जागरूक बनता है और राष्ट्र प्रगति करता है। विश्व बैंक के अनुसार, यदि महिला श्रम बल भागीदारी को 25% से बढ़ाकर 50% कर दिया जाए, तो भारत 8% की जीडीपी विकास दर के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है। 33% आरक्षण महिलाओं को नीतिगत निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा।

सशक्त भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि हम लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा दें, महिलाओं को सम्मान दें। तभी सही अर्थों में "महिला सशक्तिकरण" संभव होगा और भारत एक न्यायपूर्ण, समतामूलक और प्रगतिशील राष्ट्र बन सकेगा।

"मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस प्रगति की डिग्री से मापता हूँ जो महिलाओं ने हासिल की है।"

- डॉ. बी.आर. अंबेडकर

■ ■

पासबुक

काजल कदम
अधिकारी
गोवा अंचल

यह सन 1975 की बात है, जब बैंक में कंप्यूटर का आगमन नहीं हुआ था। वह समय ऐसा था जब लेन-देन, खातों का रिकॉर्ड, पासबुक अपडेट, कैश मैनेजमेंट सब कुछ कागज़ पर लिखा जाता था। गिनती, रिकॉर्डिंग और वेरिफिकेशन पूरी तरह मानवीय प्रयास पर निर्भर रहता था।

यह कहानी मारिया नाम की एक बुज़ुर्ग स्त्री की है जो गोवा के मड़कई गाँव में रहती थी। उसने 30 साल गल्फ में काम किया था। वापस गोवा आने के बाद उसने अपनी जमापूँजी मड़कई गाँव के एक बैंक में जमा कर दी और पाव (ब्रेड) बनाने का व्यवसाय शुरू किया। उसका कोई परिवार नहीं था। सिर्फ दो पालतू सूअर थे। मारिया सुबह तीन बजे उठकर पाव बनाती थी और जंगल जाकर सूअरों के लिए चारा लाती थी। पाव बेचकर कमाए हुए पैसे वह बैंक में जमा करती थी।

वह नियमित रूप से बैंक जाती थी और पासबुक में एंट्री करवाती थी। घर आकर वह खुद हिसाब-किताब भी करती थी। एक दिन मारिया भट्टी में आग जलाकर सूअरों के लिए चारा लाने जंगल चली गई। इस दौरान उसकी अनुपस्थिति में दोनों सूअरों के बीच झगड़ा हो गया और झगडे में उन्होंने भट्टी तोड़ दी, जिससे पूरे घर में आग लग गई। मारिया के सारे जरूरी कागज़ जल गए। जंगल से वापस आने के बाद जब मारिया ने अपना जला हुआ घर देखा, तो वह बहुत दुखी हो गई। वह फूट-फूटकर रोने लगी। गाँव के लोगों ने उसे सहानुभूति दी।

फिर मारिया ने हिम्मत जुटाई और शांत होकर यह फैसला किया कि वह अपना घर फिर से खड़ा करेगी। वह भागकर बैंक गई। लेकिन जब काउंटर तक पहुँची तो उसे झटका लगा। क्योंकि बैंक स्टाफ ने उससे पासबुक मांगी, पर मारिया की पासबुक उस आग में जल चुकी थी।

कंप्यूटर रिकॉर्ड उपलब्ध न होने के कारण वह अपना बैलेंस नहीं जान सकी। पासबुक न होने के कारण वह मारिया पैसे भी नहीं निकाल पाई। बैंक स्टाफ ने नाम के आधार पर लेजर में मारिया का खाता क्रमांक ढूँढने की कोशिश की, लेकिन उसका नाम अत्यंत कॉमन होने के कारण मुश्किल हो रही थी। फिर मारिया से एक लिखित आवेदन लिया गया। डुप्लीकेट पासबुक बनाने में 2-3 दिन का समय लगने वाला था। इस दौरान गुज़ारा करने के लिए मारिया ने अपने दोनों सूअरों को बेच दिया।

उसने पुलिस थाने में पासबुक खोने की रिपोर्ट दर्ज कराई और पंचायत से पहचान-पत्र लाकर बैंक को दिया, जिसके लिए 5-6 बार पंचायत के चक्कर काटने पड़े। चूँकि वह मैनुअल बैंकिंग का समय था, इसलिए पासबुक खो जाना एक गंभीर समस्या मानी जाती थी। अंत में बैंक ने मारिया को डुप्लीकेट पासबुक जारी कर दी। मारिया ने पैसे निकाले और घर बनाने का काम शुरू करवाया।

मुश्किल समय में मारिया के बैंक में रखे पैसे उसके काम आए, लेकिन पासबुक उपलब्ध न होने के कारण बहुत परेशानी हुई और समय की भी बर्बादी हुई। सन 1975 में खोए हुए पासबुक के कारण मारिया को जो कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं, वे आज के डिजिटल बैंकिंग के समय में नहीं होतीं। आज पासबुक खो जाने पर भी बैंक के सिस्टम में सारी एंट्रियाँ सुरक्षित रहती हैं। मोबाइल या नेट बैंकिंग में बैलेंस तुरंत मिल जाता है। पासबुक केवल रिकॉर्ड की एक प्रति है; मूल जानकारी बैंक के सिस्टम में सुरक्षित रहती है। इसलिए जोखिम बहुत कम हो गया है।

■ ■

हरित बैंकिंग का बढ़ता महत्व

गीता
वरिष्ठ प्रबंधक
बीयू ग्रामीण विभाग
प्रधान कार्यालय

आज विश्व में प्राकृतिक संसाधनों का सर्वाधिक दोहन हो रहा है। धीरे-धीरे पूरे विश्व में इन संसाधनों की कमी होती जा रही है। यही कारण कि लोग वैकल्पिक संसाधनों की खोज करते जा रहे हैं। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण विश्व की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन चुका है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी समान महत्व देना आवश्यक हो गया है। इसी उद्देश्य से बैंकिंग क्षेत्र में एक नई अवधारणा विकसित हुई है जिसे हरित बैंकिंग कहा जाता है। आजकल सभी बैंक इस ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

हरित बैंकिंग का तात्पर्य ऐसी बैंकिंग प्रणाली से है जिसमें बैंक अपने सभी कार्यों और वित्तीय गतिविधियों को इस प्रकार संचालित करते हैं कि पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव कम से कम पड़े तथा पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं को बढ़ावा मिले। यह अवधारणा सतत विकास के सिद्धांत पर आधारित है।

हरित बैंकिंग :

हरित बैंकिंग वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत बैंक अपने संचालन, निवेश तथा ऋण नीतियों में पर्यावरण-हितैषी दृष्टिकोण अपनाते हैं। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना, कार्बन उत्सर्जन को कम करना तथा पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। प्राकृतिक संसाधनों को बचाते हुए,प्रकृति के अनुकूल विभिन्न साधनों का उपयोग मानव हित में करना ही हरित बैंकिंग है।

सरल शब्दों में, जब बैंक ऐसी परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देते हैं जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के बजाय उसे सुरक्षित रखने में सहायक हो, तो इसे हरित बैंकिंग कहा जाता है।

हरित बैंकिंग की आवश्यकता -

प्रकृति के अनुकूल वातावरण तैयार करते हुए बैंकिंग करना समय की आवश्यकता है। समय हमेशा परिवर्तनशील होता है। आज के समय में हरित बैंकिंग की आवश्यकता कई कारणों से महसूस की जा रही है।

1. **पर्यावरण संरक्षण -** प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के लिए पर्यावरण-हितैषी निवेश आवश्यक है।
2. **सतत विकास -** आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना।
3. **ऊर्जा की बचत -** पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना।
4. **सामाजिक उत्तरदायित्व -** बैंक केवल लाभ कमाने वाली संस्था नहीं बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी संस्था भी हैं।
5. **प्राकृतिक संतुलन -** प्रकृति और मानव के परस्पर संबंध को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग किया जाना समीचीन है।

हरित बैंकिंग के प्रमुख उद्देश्य

वर्तमान में हरित बैंकिंग को उसी प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है जैसे कि पेट्रोल-डीजल वाहनों के स्थान पर इलेक्ट्रिक वाहनों को। यही कारण है कि वर्तमान में हरित बैंकिंग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। हरित बैंकिंग के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना।
- कार्बन उत्सर्जन को कम करना।
- नवीकरणीय ऊर्जा संबंधी परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देना।

- कागज़ रहित बैंकिंग प्रणाली को प्रोत्साहित करना।
- पर्यावरण के अनुकूल उद्योगों को बढ़ावा देना।

5. हरित बैंकिंग की प्रमुख गतिविधियाँ :

हरित बैंकिंग के अंतर्गत बैंक विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं, जैसे:

(1) डिजिटल और पेपरलेस बैंकिंग

इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, ऑनलाइन भुगतान और ई-स्टेटमेंट के माध्यम से कागज के उपयोग को कम किया जाता है। इससे पेड़ों की कटाई में कमी आती है और पर्यावरण की रक्षा होती है। इसके साथ ही, नए-नए पेड़ों को लगाने का भी कार्य किया जाना चाहिए ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके। इस तरह के उपाय से राष्ट्र की उन्नति पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

(2) ग्रीन लोन

बैंक सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस तथा अन्य नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करते हैं। इससे स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा मिलता है।

(3) ग्रीन डिपॉज़िट

ग्राहकों से प्राप्त जमा राशि को पर्यावरण-हितैषी परियोजनाओं में निवेश किया जाता है। इससे पर्यावरण संरक्षण को वित्तीय समर्थन मिलता है।

(4) ऊर्जा-कुशल बैंकिंग संचालन

बैंक अपनी शाखाओं में ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करते हैं, जैसे एलईडी लाइट, सौर ऊर्जा प्रणाली और ऊर्जा बचाने वाली मशीनें।

(5) पर्यावरण-अनुकूल निवेश

बैंक उन उद्योगों में निवेश करने से बचते हैं जो पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं और पर्यावरण-अनुकूल उद्योगों को प्रोत्साहित करते हैं जिससे पारिस्थितिकीय तंत्र संतुलन में रहे।

भारत में हरित बैंकिंग :

भारत में भी हरित बैंकिंग की अवधारणा तेजी से विकसित हो रही है। कई बैंक पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न पहल कर रहे हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी हरित वित्त और ग्रीन डिपॉज़िट को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इसके अतिरिक्त कई बैंक सौर ऊर्जा परियोजनाओं, इलेक्ट्रिक वाहनों तथा पर्यावरण-अनुकूल उद्योगों को ऋण प्रदान कर रहे हैं। देश में हरित बैंकिंग की नई शुरुआत हुई है जिससे प्रकृति एवं पर्यावरण को सुरक्षित करते हुए राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा सके।

हरित बैंकिंग के लाभ :

हरित बैंकिंग के अनेक लाभ हैं, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं:

1. पर्यावरण संरक्षण में सहायता मिलती है।
2. कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है।
3. प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है।
4. नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा मिलता है। इसको बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा अलग से नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय का गठन किया गया ताकि अधिक से अधिक वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग सुनिश्चित किया जा सके।
5. बैंकिंग प्रणाली की सामाजिक जिम्मेदारी मजबूत होती है।

इसी क्रम में, बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा भी अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, जोकि निम्नलिखित हैं:

क. बीओआई ओमनी नियो मोबाइल ऐप
ख. बीओआई डिजिटल रुपये ऐप
ग. नेट बैंकिंग; घ. ई स्टेटमेंट
ङ. किसान क्रेडिट कार्ड; च. स्टार कृषि ऊर्जा योजना
छ. कृषि यंत्रों और ट्रैक्टर ऋण

हरित बैंकिंग की चुनौतियाँ :

हालाँकि, हरित बैंकिंग के कई लाभ हैं, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं:

1. लोगों में जागरूकता की कमी, 2. प्रारंभिक लागत अधिक होना
3. तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता
4. पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं के लिए जोखिम का आकलन

निष्कर्ष :

हरित बैंकिंग आधुनिक बैंकिंग प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। यह न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है बल्कि सतत आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देती है। भविष्य में यदि बैंक, सरकार और समाज मिलकर हरित बैंकिंग को बढ़ावा दें तो पर्यावरण की रक्षा के साथ-साथ एक मजबूत और टिकाऊ अर्थव्यवस्था का निर्माण संभव है। इस तरह की पहल से देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ होगी।

इस प्रकार हरित बैंकिंग केवल एक बैंकिंग नीति नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

■ ■

ध्यान की मेरी यात्रा : परिस्थितियाँ नहीं, दृष्टिकोण बदला

प्रीति बिस्वास
वरिष्ठ प्रबंधक
एसएमईसीसी खंडवा
खंडवा अंचल

जीवन के एक दौर में मन बहुत अशांत था। भावनाएँ अनियंत्रित रहती थीं, छोटी-छोटी बातों से डर लगता था और अनजान परिस्थितियाँ भीतर असुरक्षा पैदा कर देती थीं। संवेदनशीलता इतनी अधिक थी कि हर बात मन को गहराई से प्रभावित करती थी। ऐसा लगता था मानो जीवन बाहर से नहीं, भीतर से उलझा हुआ है।

इन्हीं परिस्थितियों के बीच मन में एक गहरी इच्छा जागी - "अब स्वयं को बदलना है, भीतर स्थिरता और शांति खोजनी है।"

यहीं से मेरी ध्यान-यात्रा प्रारम्भ हुई। शुरुआत "ॐ" के उच्चारण से मन को शांत करने के प्रयास से हुई। धीरे-धीरे यह यात्रा विभिन्न माध्यमों के सहारे आगे बढ़ती चली गई। राजयोग से मेरा जुड़ाव यूट्यूब और थिंक राइट ऐप के माध्यम से हुआ, जहाँ मन को स्थिर करने और विचारों को साक्षी भाव से देखने की कला सीखी। जीवन के एक कार्य के दौरान परमहंस योगानंद जी के आश्रम जाने का अवसर मिला। वहाँ उनकी मासिक पत्रिका के माध्यम से क्रिया योग के प्रारंभिक सिद्धांतों से परिचय हुआ। इसके बाद ऑनलाइन माध्यमों से सद्गुरु जी के इनर इंजीनियरिंग कार्यक्रम का अनुभव मिला, जिसने जीवन को देखने का दृष्टिकोण बदल दिया। श्री श्री रविशंकर जी की सुदर्शन क्रिया और सहज समाधि साधना ने श्वास और मन के गहरे संबंध को समझाया। आगे चलकर कार्यालय में कार्यरत एक अधिकारी के माध्यम से हार्टफुलनेस ध्यान पद्धति से परिचय हुआ, जिसने हृदय की शांति से जुड़ना सिखाया। सच ही कहा गया है - "जब भीतर सच्ची चाह होती है, तो मार्ग स्वयं बनते जाते हैं।"

ध्यान के प्रारंभिक दिनों में कई चुनौतियाँ भी सामने आईं। मन बार-बार भटकता था, शरीर बेचैन रहता था और विचारों का शोर स्पष्ट रूप से महसूस होता था। समय के साथ यह समझ विकसित हुई कि ध्यान विचारों को समाप्त नहीं करता, बल्कि उनके प्रति जागरूकता लाता है।

इस यात्रा ने मुझे कई महत्वपूर्ण सीखें दीं -

- जीवन नहीं बदला, पर परिस्थितियों के प्रति मेरी प्रतिक्रिया बदल गई।
- विचार समाप्त नहीं हुए, पर उन्हें स्वीकार करना आ गया।
- लोगों और स्थितियों को समझने की क्षमता बढ़ी।
- धैर्य और भावनात्मक संतुलन विकसित हुआ।
- स्वयं को समझना सरल हुआ और दूसरों की स्वीकृति की आवश्यकता कम हुई।

अक्सर कहा जाता है कि ध्यान व्यक्ति को लोगों से दूर कर देता है, पर मेरा अनुभव इसके विपरीत है। ध्यान हमें सबसे पहले स्वयं से जोड़ता है। जब हम स्वयं को समझने लगते हैं, तभी दूसरों के साथ हमारे संबंध भी अधिक सहज और संतुलित हो जाते हैं। ध्यान हमें आंतरिक स्थिरता प्रदान करता है, ईश्वर से जुड़ाव का अनुभव कराता है और हर परिस्थिति में संतुलित बने रहने की शक्ति प्रदान करता है। आज भी यह यात्रा जारी है। बहुत कुछ सीखना और अनुभव करना शेष है। मेरी ध्यान-यात्रा ने मुझे यही सिखाया है - ध्यान जीवन को नहीं बदलता, बल्कि हमें इतना जागरूक बना देता है कि हम हर परिस्थिति को शांति, संतुलन और विश्वास के साथ जी सकें।

■ ■

ख़ूबसूरत सफ़र...

शिखा सामरिया
अधिकारी
मुंबई मुख्य शाखा
मुंबई दक्षिण अंचल

कहते हैं कि "मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है..." और जब वही मेहनत आपको सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि एक पहचान दे - तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है। मेरे लिए बैंकिंग सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक ऐसा माध्यम है, जिसने मुझे न केवल आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि समाज के प्रति मेरी जिम्मेदारियों को भी समझाया। आज मैं अपने इस बैंकिंग सफर के कुछ अनुभव आप सभी के साथ साझा करना चाहती हूँ।

बैंक केवल दूसरों की आर्थिक समस्याओं का समाधान ही नहीं करता, बल्कि यहाँ कार्य करते हुए व्यक्ति अपनी मेहनत और समर्पण से अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकता है। बैंकिंग में एक वर्ष कार्य करने के बाद मुझे इस बात का गहराई से एहसास हुआ। बैंकिंग जैसे सेवा-प्रधान क्षेत्र में आकर समाज की सेवा करना मेरा एक सपना था। औरों की तरह मुझे भी अपने सपनों और ख्वाहिशों को पूरा करना था। इसी उद्देश्य के साथ मैंने सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू की, जिसमें मुख्य रूप से मेरा झुकाव बैंक ऑफ़ इंडिया की ओर था। इसका कारण यह था कि बचपन से ही मैंने अपने परिवार को बैंक की सेवाओं का लाभ उठाते हुए देखा है। इन्हीं अनुभवों ने मेरे मन में इस क्षेत्र के प्रति एक विशेष जुड़ाव पैदा किया। इसलिए मैंने बैंकिंग क्षेत्र को प्राथमिकता देते हुए इसी दिशा में अपने करियर को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

चयन होने के बाद भी चुनौतियाँ कम नहीं थीं। कई लोगों ने कहा कि बैंकिंग क्षेत्र में कार्य का अत्यधिक दबाव होता है, व्यक्तिगत जीवन के लिए समय नहीं मिल पाता और व्यक्ति अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाता। परंतु इन बातों से प्रभावित होने के बजाय मैंने स्वयं पर और अपने परिवार के विश्वास पर भरोसा किया। इसी विश्वास के साथ मैंने अपने बैंकिंग करियर की शुरुआत की, जिसमें मुझे पहली पोस्टिंग मुंबई में प्राप्त हुई। नए शहर में, घर से दूर, शुरुआत में परिस्थितियों को समझना मेरे लिए थोड़ा कठिन था। लेकिन मैंने हर परिस्थिति को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार किया और हर अनुभव को सकारात्मकता के साथ जीते हुए आगे बढ़ना सीखा।

इसी बैंकिंग करियर के तहत मैंने अपनी कई ख्वाहिशें भी पूरी कीं। मैंने अपने माता-पिता और अन्य परिवार के सदस्यों के लिए बहुत कुछ किया। अपनी मेहनत से कमाकर मैंने अपनी पहली ट्रिप की और उस कमाई से मैं अपने परिवार के साथ गोवा गई। उस पल ने मुझे मेरी आत्मनिर्भरता का वास्तविक एहसास कराया। मैंने अपने लिए भी बहुत कुछ किया। जो कुछ भी मुझे बैंकिंग ने दिया और जिस प्रकार इसने मुझे एक बेहतर इंसान के रूप में गढ़ा, उसके लिए मैं हमेशा बैंक की आभारी रहूँगी।

बैंकिंग के इस सफर में मैंने केवल कार्य से संबंधित ज्ञान ही नहीं प्राप्त किया, बल्कि जीवन के वास्तविक मूल्यों और उनके महत्व को भी समझा। इस अनुभव ने मुझे न केवल एक बेहतर प्रोफेशनल बनाया, बल्कि एक मजबूत, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी व्यक्ति के रूप में भी विकसित किया। यदि यह कहा जाए कि बैंकिंग प्रणाली हमारे देश की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

परिवार की आय को ध्यान में रखते हुए बचत करना और उस बचत को सुरक्षित रखकर उस पर ब्याज प्राप्त करना - यह सब बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से ही संभव है। छोटी-छोटी पारिवारिक बचतों को बैंक में जमा करके न केवल उन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि परिवार के आय-व्यय की एक सुनियोजित योजना भी बनाई जा सकती है। यही योजना आगे चलकर देश के बजट निर्माण की प्रथम सीढ़ी बनती है।

पूर्व में लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं को सूदखोरों द्वारा पूरा किया जाता था, जिसके कारण किसानों, गरीबों एवं विद्यार्थियों का

शोषण होता था। लेकिन बैंकों द्वारा सुलभ ऋण उपलब्ध करवाए जाने से इस शोषण में कमी आई है। इस प्रकार बैंक एक बड़ी सामाजिक बुराई को समाप्त कर उसके स्थान पर एक व्यवस्थित और न्यायसंगत व्यवस्था प्रदान करते हैं।

बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से विभिन्न वर्गों के लोगों से परिचय होता है, जिससे उनके विचार, समस्याएँ और आवश्यकताएँ समझने का अवसर मिलता है। इन्हीं सूचनाओं के आधार पर बैंक अपनी योजनाएँ तैयार करते हैं, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक उनकी सेवाएँ पहुँच सकें। सामाजिक सेवाएँ प्रदान करने के लिए देश के लोगों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझते हुए बैंकिंग प्रणाली को व्यवस्थित करना ही प्रभावी समय-प्रबंधन का प्रमुख आधार है।

हमारे देश को 'लोक-कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) बनाने में बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंकों से ऋण प्राप्त कर किसान, व्यापारी, विद्यार्थी आदि अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। उन्हें अपनी क्षमता दिखाने का समुचित अवसर प्रदान करना ही मानव संसाधन विकास (Human Resource Development) का मूल उद्देश्य है।

अत: मैं यह विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि बैंकिंग केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास का एक सशक्त माध्यम है, जो न केवल आर्थिक उन्नति, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

"आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो यह महसूस करती हूँ कि बैंकिंग ने मुझे सिर्फ एक पेशा नहीं दिया, बल्कि एक पहचान, आत्मविश्वास और अपने सपनों को साकार करने की शक्ति दी है। अपने माता-पिता के लिए कुछ कर पाना, अपनी पहली कमाई से अपने परिवार के साथ यात्रा करना - ये सिर्फ अनुभव नहीं, बल्कि मेरी आत्मनिर्भरता के प्रतीक हैं।

अत: मैं गर्व के साथ यह कह सकती हूँ कि बैंकिंग केवल एक करियर नहीं, बल्कि एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो व्यक्ति और समाज; दोनों के विकास का आधार बनता है।"

■ ■

नारी : सृष्टि का आधार

वह कोमल है, पर कमज़ोर नहीं,
मौन खड़ी है, पर बेज़ोर नहीं।
सृष्टि का चक्र उसी से चलता है,
धैर्य का सूरज उसी के आँगन में ढलता है।

वह घर की नींव है, और आकाश की उड़ान भी,
वह मर्यादा की परिभाषा है, और देश की शान भी।
कभी बेटी, कभी बहन, कभी पत्नी का किरदार,
हर रिश्ते में घोलती है वह ममता और दुलार।

सहने की शक्ति जिसमें सबसे अपार है,
वह कोमल हृदय नारी, धैर्य का अवतार है।
पत्थरों को तराश कर जो राह बनाना जानती है,
वो हर मुश्किल को अपनी हिम्मत से पहचानती है।

जिसे दुनिया ने 'अबला' कहकर पुकारा,
उसी ने वक्त पड़ने पर काली-सा साहस धारा।
न थकी वो कभी, न झुकी वो कभी,
अपने सब्र से ही, हारी हुई बाजी को संवारा।

एक ही देह, पर कितने रूप समाए हैं,
ईश्वर ने फुर्सत में ये किरदार बनाए हैं।
कभी सागर-सी गहराई, कभी नदी-सी धार है,
नारी ही तो हर घर का असली आधार है।

मौसुमी दास
कृषि अधिकारी
स्टार कृषि विकास केंद्र
केंदुझर अंचल

आधुनिकताः सच या दिखावा

बीना शर्मा
राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

आज का युग आधुनिकता का युग है। विज्ञान, तकनीक, संचार, शिक्षा - हर क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं और मानव जीवन-शैली में तेजी से बदलाव हुए हैं। विज्ञान ने मनुष्य को चाँद पर पहुँचा दिया है और पूरी दुनिया को एक छोटे-से गाँव में बदल दिया है। परंतु प्रश्न यह उठता है कि क्या यह आधुनिकता सच में जीवन को बेहतर बनाने वाला परिवर्तन है या केवल एक बाहरी दिखावा है। इस विषय पर विचार करने के लिए हमें दोनों पक्षों को समझना आवश्यक है।

हम जानते हैं कि आज मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने पूरे विश्व को हमारी उँगलियों पर ला दिया है और हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। चिकित्सा के क्षेत्र में नई-नई खोजों ने कई लोगों को जीवन दिया है और इसने शिक्षा को भी विश्व के हर कोने तक पहुँचाया है। साथ ही इसने समाज में लैंगिक समानता, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मूल्यों के महत्व को बढ़ाया है। आज का मनुष्य किसी भी बात को तर्क से सोचता है और उस पर विचार करता है, उसके बाद ही किसी निर्णय पर पहुँचता है। हालाँकि कई बार वह अफवाहों में भी फँस जाता है। आधुनिकता ने निश्चय ही एक प्रगतिशील समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यही नहीं, वैज्ञानिक खोजें आज हमारे लिए एक वरदान की तरह हैं। परंतु विचार यह है कि क्या यह वरदान वास्तव में हमारे जीवन को बेहतर बनाने में सफल हो पाया है? क्या हम सच में आधुनिक बन पाए हैं?

यदि हम इसके दूसरे पक्ष को देखें, तो हमें यह मालूम पड़ता है कि एक तरफ़ मनुष्य विश्व के हर कोने के लोगों से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी तरफ़ वह अपने ही घर में अकेला महसूस कर रहा है। आज मनुष्य एक ही घर में सपरिवार रहकर भी एक दूसरे से दूर है; उनमें संवाद कम हो गए हैं और आत्मीयता घट गई है। वह अपनों के बीच रहकर भी अपनेपन से वंचित है। एक तरफ़ वह खुश रहने का दिखावा करता है, तो दूसरी तरफ़ अपने मन में कई संवेदनाओं को ढोता रहता है। यह स्थिति दर्शाती है कि कहीं न कहीं यह आधुनिकता केवल हमारी बाहरी दिखावा हो सकती है।

आधुनिक जीवन-शैली ने आज प्रतिस्पर्धा को इतना बढ़ा दिया है कि हर व्यक्ति सफलता की दौड़ में लगा हुआ है। वह शिक्षा, नौकरी और प्रतिष्ठा की होड़ में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने स्वास्थ्य और संबंधों के लिए समय ही नहीं है जिससे उसमें असंतोष और तनाव बढ़ते जा रहे हैं और वह मानसिक रूप से बीमार होता जा रहा है। आज एआई के प्रयोग ने हमारी बुद्धि तथा सोचने की क्षमता को सीमित कर दिया है। हम पूरी तरह तकनीक पर निर्भर होते जा रहे हैं और इससे अपनी क्षमताओं का कम उपयोग करते जा रहे हैं। यह हमें एक पतन की स्थिति की ओर लेकर जा रही है जहाँ हमारी सफलता केवल बाहरी दुनिया को दिखाने के लिए रह जाएगी, जबकि अंदर ही अंदर हमारे भीतर एक खोखलापन बनता जा रहा है।

आधुनिकता के नाम पर आज की पीढ़ी अपने पारंपरिक मूल्यों और संस्कृति से दूर होती जा रही है। लोग अपनी भाषा, रीति-रिवाज और संस्कारों को पुराना समझकर त्यागने लगे हैं और पश्चिमी जीवन-शैली को अपनाने लगे हैं। हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। फैशन, सोशल मीडिया, चमक-दमक को ही आधुनिकता का प्रतीक मानने लगे हैं। परंतु क्या यह सच में हमारे आधुनिक होने का प्रमाण है? नहीं, आधुनिकता हमारी सोच में होनी चाहिए, हमारे कपड़ों में नहीं। हम एक ऐसी इमारत का निर्माण कर रहे हैं, जो ऊपर से देखने में बहुत सुंदर है, परंतु अंदर से उसमें दरारें पड़ी हुई हैं।

प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है - "सच्ची आधुनिकता मन की स्वतंत्रता में है, केवल बाहरी परिवर्तन में नहीं।"

आज आधुनिक मनुष्य में नैतिक मूल्य कम होते जा रहे हैं। उनमें ईमानदारी, सादगी और संतोष जैसे गुण पीछे छूटते जा रहे हैं और भ्रष्टाचार, स्वार्थ जैसे अवगुण बढ़ते जा रहे हैं। यह सच है कि आज न्याय और सुरक्षा की व्यवस्थाएँ बढ़ रही हैं, पर साथ ही हिंसा और क्रूरता भी बढ़ रही हैं। स्वार्थ में अंधे होकर हम सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि प्रकृति का भी नुकसान कर रहे हैं। हम यह भूलते जा रहे हैं कि अगर हम प्रकृति को नष्ट करेंगे, तो प्रकृति भी हमें नष्ट कर देगी।

आधुनिकता का प्रयोग समाज और प्रकृति को लाभ प्रदान करने के लिए होना चाहिए, न कि उसे नष्ट करने के लिए। आज मनुष्य स्वयं को सबसे आगे बढ़ाने और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मानवता का गला घोंटता जा रहा है। जिन वैज्ञानिक हथियारों का प्रयोग हमने समाज और विश्व को बचाने के लिए किया था, उन्हीं का प्रयोग आज विश्व को नष्ट करने के लिए किया जा रहा है। यह हमारे ही द्वारा बनाए गए आविष्कारों पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी कहा है- "तकनीक का विकास मानवता से आगे नहीं निकल जाना चाहिए।"

आधुनिक होना गलत नहीं है, परंतु यह किस तर्ज पर हो, यह मायने रखता है। आज हमने भौतिक सफलता और संपन्नता को ही आधुनिकता का रूप दे दिया है, परंतु आधुनिकता मानवता की रक्षा और मानव जीवन के कल्याण के लिए होनी चाहिए। यदि हम आधुनिकता का प्रयोग समाज की भलाई के लिए करें, तो हम एक श्रेष्ठ समाज और बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। परंतु इसके लिए हमें अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचना होगा। हमें अपने सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को बनाए रखते हुए आधुनिकता को अपनाना होगा। जब हम अपने भीतर के अकेलेपन को दूर कर आत्मिकता और नैतिकता को पुन: स्थापित करेंगे, तभी हम एक समृद्ध और संतुलित आधुनिक समाज का निर्माण कर सकेंगे।

अंतत: कहा जा सकता है कि आधुनिकता न तो पूरी तरह सच है और न ही केवल दिखावा। यह हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार पर निर्भर करती है। इसलिए हमें दिखावे की आधुनिकता से बचकर सच्ची और सार्थक आधुनिकता को अपनाना होगा। तभी हम सही अर्थों में आधुनिक बन पाएँगें।

■ ■

जुस्तजू

मैं औरत हूँ, माया-ममता और त्याग का एक रूप हूँ,
पर सिर्फ ममता और त्याग से आज मुझे और मत पहचानो।
कहीं मैं बदल-सी गई हूँ, थोडी बिगड़ भी गई हूँ,
क्योंकि आज मुझे ठहरने से ज्यादा उड़ने का शौक है।
मेरे अस्तित्व के शुरू से ही, एक अलग ही उपेक्षा,
एक अलग ही तौहीन, मैंने समाज में खिलती देखी है,
ना जाने कितने सालों से मन मेरा,
रीति-रिवाजों के पिंजरों में रोता रहा, फड़फड़ाता रहा।
मुझे जितने बड़े पैमाने से एक सीमा में बाँधना चाहा
मैंने उतना ही कसकर अपने पंख फैलाए,
एक दिन दूर आसमा में उस सीमा को लाँघने के लिए
जो सीमाएँ तो सिर्फ औरतों के लिए ही बनी थी।
नारी-पुरुषों में छोटे-बड़े ना जाने कितने पक्षपातपूर्ण प्रश्न,
बचपन से ही मेरे जहन में रहे हैं।
कभी उस बच्ची की जुस्तजू को पूछ के देखो,
जिसे खाने में, छूटा हुआ खाना ही नसीब हुआ।
ना जाने कब वो मासूमियत सबसे रूठ कर
खुद से किए हुए कुछ वादों में बदल गई।
फिर एक दिन कड़ी मेहनत से वो सीमाएँ मैंने लाँघ ली,
खुला आसमा मिला, पद, प्रतिष्ठा व स्वाधीनता भी मिली।
पर आज भी मेरे आसमा में कुछ काले बादल क्यों छाये हैं?
आँखों में नमी है, सब कुछ थोड़ा धुंधला-सा क्यों है?
शायद कसकर पंख झपटते-झपटते वो बचपन कहीं खो गया,
खुद से, अपनो से और समाज से लड़ते-लड़ते
एक दिन खुद में ही कहीं खो गई।
पर उसी धुंधलेपन से कोई मेरे कानों में चुपके से बोलता रहा,
बेटी थको मत, थोड़ा और थोड़ा-सा और अपने पंख तो फैलाओ;
समाज के दिए सारे बोझ पीछे छोड़के तुम उड़ तो चलो,
शायद अगली पीढ़ी को, कि शायद अगली पीढ़ी को
काले बादलों के आगे रंगों से खिला, खुला आसमा मिल जाए।

रीना सरकार
प्रबंधक
सिलीगुड़ी अंचल

चेरी ब्लॉसम

पुष्परेखा किस्कु
लिपिक
बारिपदा अंचल

मीरा अपनी दोस्त इसिका के साथ स्कूल से लौट रही थी। कड़कड़ाती ठंड और बर्फीली रास्ते में दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। पर रोज़ाना जाने वाले रास्ते में भीड़ लगी हुई थी, इसीलिए उन्होंने दूसरे रास्ते से जाने का सोचा, जो जंगल की ओर से होकर गुजरता था। बर्फबारी शुरू हो गई थी, दोनों उसी तरफ आगे बढ़ने लगीं। जंगल के नज़दीक आते-आते मीरा के पैर लड़खड़ाने लगे; ठंड से नहीं डर से। क्योंकि आगे था बड़ी-बड़ी टहनियों वाला वही भयानक पेड़, जहाँ एक बड़ा-सा राक्षस रहता था।

मीरा उस रास्ते में जाने से मना करते हुए वहाँ से भाग गई। जब मीरा छोटी थी, उसकी बड़ी बहन उसे उस जंगल की ओर जाने से मना करती थी, क्योंकि वहाँ एक राक्षस रहता था। आज मीरा बड़ी हो गई है और यही सोचती रहती है कि क्या सच में वहाँ कोई राक्षस था। पर जो भी हो, मीरा फिर से कभी उस रास्ते से जा ही नहीं पाई।

आज मीरा की बड़ी बहन स्नो स्केटिंग के लिए जाने वाली थी। मीरा के माता-पिता उसके साथ बाहर चले गए। मीरा अपने डॉगी के साथ घर पर अकेली रह गई। बाहर हल्की-हल्की धूप पड़ने लगी। वह खिड़की के पास बैठी बाहर का नज़ारा देख रही थी कि अचानक उसका डॉगी घर से बाहर निकल गया और तेज़ी से जंगल की ओर भागने लगा। मीरा उसके पीछे जाने लगी, पर डॉगी जंगल तक पहुँच चुका था, या फिर कहो-उसी पेड़ के पास था। मीरा एक पल के लिए ठहर गई, पर वहाँ जाने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था। वह अपने डॉगी को अकेले बाहर ठंड में नहीं छोड़ सकती थी।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी। सारे पेड़ बर्फीली चादर में लिपटे हुए थे। टहनियों के बीच से होते हुए सूरज की कोमल रोशनी सफ़ेद ज़मीन पर गिर रही थी। वहाँ कोई राक्षस नहीं था, बल्कि यह तो जैसे कोई जन्नत जैसा था। मीरा अपने डॉगी को लेकर वहाँ से वापस आ गई।

जब सब डिनर के टेबल पर बैठे थे, मीरा बताती है कि वह एक फैमिली कैंपिंग चाहती है। सब बहुत खुश थे, क्योंकि पहली बार मीरा जंगल में कैंपिंग के लिए जाने वाली थी।

टेंट जंगल के बीचों-बीच लगाया गया था। उसकी बड़ी बहन और पापा लकड़ियाँ लाने गए थे। मीरा अपनी माँ के पास बैठी थी। वापस लौटते ही मीरा अपनी बहन से पूछती है कि क्या उसे वह डरावना पेड़ याद है जहाँ राक्षस रहता था। उसकी बहन हँसती है और बताती है कि वह बचपन में बनाई गई एक मनगढंत कहानी थी - यहाँ ऐसा कुछ नहीं है। फिर दोनों साथ में स्नो स्केटिंग की रेस लगाती हैं और रात को स्टार गेज़िंग करती हैं।

धीरे-धीरे सर्दी खत्म होने लगी और बसंत आ गया। मीरा स्कूल से लौट रही थी। एक पल के लिए वह ठहर गई। आज न उसके साथ उसकी दोस्त थी और न ही उसका डॉगी। रोज़ाना जाने वाला रास्ता छोड़कर वह जंगल के रास्ते पर चलने लगी। वहाँ कोई बर्फ नहीं थी, बल्कि जंगल कई तरह के रंगों से भरा हुआ था। जब मीरा उसी भयानक पेड़ के पास पहुँची, तो वह गुलाबी फूलों से ढका हुआ था। वह एक चेरी का पेड़ था। चेरी ब्लॉसम शुरू हो चुकी थी। पूरा रास्ता फूलों की पंखुड़ियों से भरा हुआ था। तेज़ हवा आते ही लहराते फूलों से आसमान गुलाबी हो गया था।

मीरा आज खुश थी। एक सुकून भरे एहसास के साथ वह आगे बढ़ने लगी। फूलों की पंखुड़ियाँ जैसे दूर-दूर तक उड़ते हुए आसमान में खो जा रही थीं, वैसे ही उसका डर हमेशा के लिए खत्म हो चुका था।

कभी-कभी चीज़ें उतनी कठिन नहीं होतीं, जितना हम मान लेते हैं, मगर हमारा डर ही हमें आगे बढ़ने से रोक लेता है।

■ ■

विश्व हिंदी दिवस 2026 का आयोजन

प्रधान कार्यालय

न्यूयॉर्क शाखा

आगरा अंचल

अहमदाबाद अंचल

बारासात अंचल

बर्धमान अंचल

बारिपदा अंचल

बेंगलूरु अंचल

भागलपुर अंचल

भोपाल अंचल

भुवनेश्वर अंचल

बोकारो अंचल

चंडीगढ़ अंचल

चेन्नै अंचल

कोयंबत्तूर अंचल

देहरादून अंचल

दिल्ली एनसीआर अंचल

धनबाद अंचल

एर्णाकुलम अंचल

गांधीनगर अंचल

गया अंचल

गाजियाबाद अंचल

गोवा अंचल

गोरखपुर अंचल

गुवाहाटी अंचल

हावड़ा अंचल

इंदौर अंचल

जबलपुर अंचल

जयपुर अंचल

जमशेदपुर अंचल

जोधपुर अंचल

कानपुर अंचल

केंदुझर अंचल

खंडवा अंचल

कोल्हापुर अंचल

कोलकाता अंचल

लखनऊ अंचल

मदुरै अंचल

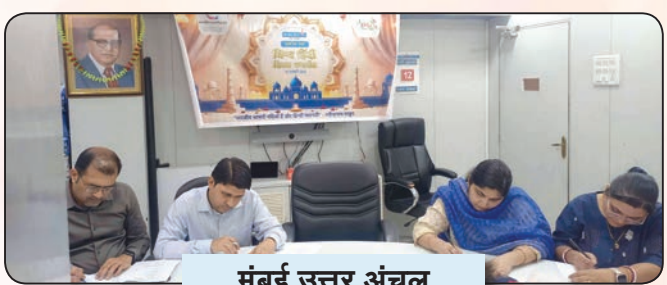

मुंबई उत्तर अंचल

मुंबई दक्षिण अंचल

मुजफ्फरपुर अंचल

नागपुर अंचल

नासिक अंचल

नवी मुंबई अंचल

पुणे अंचल

रायगड अंचल

रायपुर अंचल

राजकोट अंचल

रांची अंचल

संबलपुर अंचल

सिलीगुड़ी अंचल

सिवान अंचल

सोलापुर अंचल

सूरत अंचल

तिरुवनंतपुरम अंचल

उज्जैन अंचल

वडोदरा अंचल

वाराणसी अंचल

विदर्भ अंचल

विजयवाडा अंचल

विशाखापट्टणम अंचल

आईटीटीसी पुणे

एसटीसी नोएडा

प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी

दिनांक 7 फरवरी 2026 को प्रधान कार्यालय में अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में "हिंदी भाषा एवं उसकी मानक वैज्ञानिक पद्धति" विषय पर वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध अभिनेता एवं लेखक श्री अखिलेंद्र मिश्र।

विश्व कविता दिवस
21 मार्च

जीवनचर्या

वो जो कल जिंदा थी,
वो जिसकी हँसी थी, सपने थे,
भविष्य की राह में इतिहास बनाना था।
वो आज टूट, बिखर कर, ना-सी है,
वो माँ है, बस इसलिए जिंदा-सी है।

कोई अगर मिले ऐसा, तो मान लेना,
वो गई तो होगी अपने लिए भगवान से माँगने,
और उस रोशनी ने तुम तक पहुँचाया होगा,
बस सुन लेना, समझ लेना,
उस रोशनी ने तुम तक पहुँचाया है उसे,
वो अभी भी शायद कहीं जिंदा-सी है।

कोई अगर मिले ऐसा तो उससे कहना हारे नहीं,
माना, खोया बहुत, पर सुनो;
खो दिया वो नाज़ अपने काम पर,
खो दिया आचरण प्रमाण पत्र,
माना, खोया बहुत, पर सुनो,

सुना है,
जब हार जाओ; अंधेरों में गुम जाओ,
तो कान्हा संभालने आते हैं,
वो आ जाएँगे हौसला रखना....
वो नीति है; रुचि है कर्म में;
संतोष धरो;
रोशनी का दीप(क) फिर मिलेगा;
हर हौसला, हर साथ, तेरा नाम फिर मिलेगा।

सोनम सेठ
ग्राहक सेवा सहयोगी
अंसारी रोड शाखा
नई दिल्ली अंचल

एनआरआई की नज़र से.....

"परदेस में मन लग गया है अब"
कहता हूँ मैं ये जब-जब...
मन का सूना, एक कोना
आहें भरता है तब-तब...
वहाँ होता हूँ तो होता हूँ मैं मायग्रेण्ट इंडियन
यहाँ आता हूँ तो होता हूँ मैं नॉन रेसिडेंट इंडियन...
व्याख्याएँ मेरे अस्तित्व की बदलती रहती हैं यूँ ही
बदलता नहीं है पर कभी भी
मेरे भीतर बसा इंडियन...
फॉरेन की टेकनॉलॉजी और
भारत की संस्कृति का
सुवर्ण संगम हमने मनाया है...
मिलकर हमने वहाँ अपना
एक नया आशियाना बनाया है...
क्रिसमस, हॅल्लोवीन, न्यू ईयर ईव,
कहाँ मन को लुभाते हैं...
इसीलिए, दिवाली, नवरात्रि और उत्तरायण में,
हम अपने भारत में आते हैं...
बोलो कैसे हो सकते हैं दूर;
दिवाली से दिए, उत्तरायण से पतंग
और नवरात्र से गरबा-दांडिया...
और कैसे हो सकता है दूर हम एनआरआई वालों से
हमारा अपना बैंक ऑफ़ इंडिया...
विदेश में बैठकर जब-जब हमने
सेफ बैंकिंग की सोची है,
तब-तब मन में नि:संशय
बस एक ही बैंक गूंजा है...
इसीलिए बैंक ऑफ़ इंडिया के संग हमारी,
रिश्तों की जमापूँजी है...
बैंक ऑफ़ इंडिया के संग हमारी,
रिश्तों की जमापूँजी है...।।

पल्लवी कंदले
वरिष्ठ प्रबंधक
ऋण निगरानी विभाग
अहमदाबाद अंचल

दानव और मानव

एक दिन सपने में मेरे रावण आया,
मन में मेरे थोड़ा-सा डर छाया।
वह एक पुतले के रूप में खड़ा था,
मगर उसके हर मुख पर दर्प और अभिमान बड़ा था।
बारी-बारी से हर मुख की मूंछ को ताव दे रहा था,
व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ इधर-उधर देख रहा था।

मैंने थोड़ा सकुचाते हुए धीरे से उससे पूछा,
"किस बात का तुम्हें इतना अभिमान है?
अभी थोड़ी देर में आने वाले श्रीराम हैं,
कुछ ही समय में हरने वाले तुम्हारे प्राण हैं।
अंत समय तुम्हारा आने ही वाला है,
क्या कारण है, तुम्हारा अंदाज फिर भी निराला है?"

पहले तो मेरी बात सुन वह थोड़ा-सा मुस्कुराया,
फिर जोर का उसने अट्टहास लगाया।
थोड़ा गंभीर होकर फिर वह बोला,
"तुम मेरा पुतला जलाकर खुश हो जाते हो,
मैं जलकर धुँआ बन जाता हूँ,
धुँआ बनकर पूरी हवा में फैल जाता हूँ।
तुम मेरा पुतला जलाकर खुश हो जाते हो,
अनजान हो कि चारों ओर तुम मुझसे ही घिरे हो।"

समझ में मेरी कुछ भी नहीं आया,
मगर मन में मेरे संशय और भी गहराया।
मेरी दुविधा को समझ फिर से वह बोला,
"आज दानव और मानव का एक हो गया है चोला,
हर मानव के मन में रावण बसा हुआ है,
और रावण को मार सके ऐसा राम इस युग में पैदा ही कहाँ हुआ है?
मैं मरकर भी हो चुका हूँ अमर,
बचा लो अपने आप को, बचा सकते हो अगर।"

मैंने पूर्ण विश्वास के साथ कहा,
"हम अपने भीतर की बुराइयों को खुद हराएंगे,
हम राम को ना ला पाए, ना सही,
हम स्वयं ही राम बन जाएंगे।"

प्रतिभा शर्मा
अधिकारी
उज्जैन अंचल

मैं स्त्री हूँ

"मैं स्त्री हूँ"
स्त्री...
तुम्हारा नाम जितना छोटा है,
तुम्हारी कहानी उतनी ही लंबी है।
तुम जितनी कोमल हो,
तुम्हारा जीवन उतनी ही चुनौतियों से भरा है।
कभी बेटी बनकर सपनों को थामती हो,
कभी बहन बनकर घर की हँसी बन जाती हो,
कभी पत्नी बनकर जिम्मेदारियाँ उठाती हो,
और कभी माँ बनकर पूरी दुनिया सँभाल लेती हो।
तुम गिरती हो...
पर हारती नहीं।
तुम टूटती हो...
पर बिखरती नहीं।
हर सुबह
फिर से खुद को समेटकर
नई ताकत के साथ खड़ी हो जाती हो।
तुम ज्वाला भी हो
और शांति भी।
तुम संघर्ष भी हो
और समाधान भी।
तुमसे ही यह संसार है,
तुमसे ही यह जीवन है।
यह धरती भी तुम्हारी ही धड़कनों से धड़कती है।
तो अगर कोई पूछे-
"क्या हो तुम?"
तो सिर उठाकर कहना-
मैं स्त्री हूँ...
सम्मान हूँ, स्वाभिमान हूँ।
मैं शक्ति हूँ, मैं सृजन हूँ।
और सच तो यह है-
पूरी सृष्टि मुझसे ही है,
क्योंकि मैं स्त्री हूँ।।

दीपिका
अधिकारी
भागलपुर अंचल

माँ-बाप

भगवान का दिया अनमोल तोहफा है वो,
अपने बच्चों की खुशी के लिए दुनिया से लड़ जाएँ,
ऐसे इंसान हैं वो।
जिनके उपकारों और बलिदानों को
शब्दों में नहीं किया जा सकता बयां,
उन्हें कहते हैं माँ-बाप, जिनमें बसता है मेरा पूरा जहाँ।

बचपन में उँगली पकड़कर जिन्होंने चलना सिखाया था,
कलम पकड़कर जिन्होंने लिखना सिखाया था,
हमें जरा-सी चोट लगाने पर फट से मरहम उन्होंने ही
लगाया था।
अपनी जरूरतों को दाँव पर रखकर
हमारी जरूरतों को पूरा किया करते थे,
और चाहे कुछ भी हो जाए,
हमें किसी चीज की कमी नहीं होने देते थे।

खुद चाहे जितने भी थके हुए होते थे,
हमें देखकर अपनी थकान भूल जाया करते थे,
और हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए दिन-रात एक कर
दिया करते थे।
हमारी गलतियों पे जो हमें डाँट देते थे,
फिर प्यार से समझाते भी थे,
जब हम बड़े हुए तो एहसास हुआ कि
आप हमेशा सही कहा करते थे।
वो माँ-बाप ही थे, जो हमारी हर तकलीफ में
हमारे साथ खड़े होते थे,
और वो माँ-बाप ही थे जो बिना किसी स्वार्थ के हमें बहुत
प्यार किया करते थे।

हमें हँसाने के लिए जो खुद बच्चे बन जाया करते थे,
खुद की नींद उड़ाकर जो हमें सुलाया करते थे,
खुद भूखे रहकर जो हमें खिलाया करते थे।
धरती पर साक्षात भगवान का रूप हैं वो,
जो हर वक्त सिर्फ हमारी चिंता किया करते थे।

दुनिया में माँ-बाप से बढ़कर कुछ नहीं,
कभी उनका साथ मत छोड़ना और चाहे कुछ भी हो जाए,
उनका दिल कभी मत तोड़ना,
उनके कर्जदार हैं हम, शायद ही कभी
उनका कर्ज चुका पाएँगे,
हे मेरे ईश्वर! उन्हें हमेशा सलामत रखना,
वरना हम जी नहीं पाएँगे।

डिम्पल गंगानी
अधिकारी
वाडज रोड शाखा
अहमदाबाद अंचल

नारी एक, तेरे रूप अनेक

नारी एक, तेरे रूप अनेक,
शुरू होती तेरी कहानी
असमंजस की जुबानी।।

कभी भ्रूण में ही तेरी साँसे रोक दी जाती,
तो कभी बचपन की मुस्कान
ज़िम्मेदारी तले दबा दी जाती।।

तू पहले बेटी, पत्नी, फिर माँ
का फर्ज बखूबी निभाती।।

सबकी जरूरतों को पूरा करते-करते
अपनी ख्वाहिशों को भूल ही जाती।।

संघर्षपूर्ण जीवन के हर मोड़ पर
अपने लिए नए रास्ते खुद बनाती,
नारी एक, तेरे रूप अनेक।।

सीमा सिंह
ग्राहक सेवा सहयोगी
इलाहाबाद मुख्य शाखा
वाराणसी अंचल

नारी

शक्ति का स्वरूप है नारी,
नव दुर्गा का रूप है नारी।
सृजन शक्ति के रूप में करती,
विध्वंसक अवधूत है नारी।
कह गए राष्ट्रकवि मैथिली,
त्याग और तपस्या की मूरत है नारी।
हैं एक नहीं दो-दो मात्राएँ,
नर से तो भारी है नारी।
जिससे उपवन महक रहा है,
जिससे फूल रही फुलवारी।
पुरुष प्रधान समाज अपना,
उसे समझता है बेचारी।
शक्ति के अंदर से ही जन्मा,
स्वयं कहे खुद को अवतारी।
शक्ति का स्वरूप है नारी,
नव दुर्गा का रूप है नारी।।

दीक्षा अग्निहोत्री
ग्राहक सेवा सहयोगी
कटरी पीपर खेड़ा शाखा
कानपुर अंचल

सांकेतिक भाषा - 'समझो इशारे'

मानव जीवन की अभिव्यक्ति है भाषा,
बिन आवाज़ जो समझाए, वो है सांकेतिक भाषा।
शब्दों का बेशक कोई उच्चारण नहीं,
फिर भी दिल तक हर बात पहुँच जाती सही।
हाथों के इशारों से व्यक्त हो जाता हर संदेश,
विचारों और भावों का भी करती यह उल्लेख।
चेहरे के हाव-भाव से बयां हो जाते हैं जज़्बात,
बोल कर बताने की फिर ज़रूरत न रहे खास।
हाथों, उँगलियों में सुसज्जित प्यार और संवेदना,
जब ये वार्ता में घुल जाएँ, तो हर ले हर वेदना।
शब्दों के शोर में जब मन हो जाए बैचेन,
संकेतों में तब शब्दों से पहले भाव पहचाने नैन।
दिव्यांगों को दिलाती है बराबरी और सम्मान,
फिर क्यूँ वर्ष में सिर्फ एक दिन देते इसको मान।

सुलेखा शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
आंचलिक कार्यालय
चंडीगढ़

दफ्तर

एक दफ्तर है, जहाँ रोज़ जाना है।
कुछ काम है, जो रोज़ करना है।
एक मन है, जो काम, घर, पुस्तक, ख्वाब -
कई जगह रहता है।

इस कोलाहल समाज में
समय है, पर है नहीं।
क्या जहाँ जा रहे हैं, वहाँ जाना था?
यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

यह सवाल भी जायज है;
पर क्या हमें केवल सवालों के घेरे में ही खोए रहना है,
या कुछ ऐसा करना है
जो अब तक किया नहीं?

उलझती है ज़िंदगी
सुलझ जाने के लिए,
हम भी उसी राह पर हैं,
इसे सुलझाने के लिए।

दीक्षा
विधि अधिकारी
रायगड अंचल

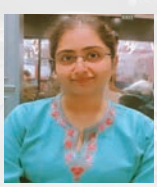

स्वस्थ जीवनचर्या : बेहतर जीवन की कुँजी

रानी पवार
प्रबंधक
वित्तीय समावेशन विभाग
लुधियाना अंचल

आज के तेज़-रफ्तार और व्यस्त जीवन में स्वस्थ रहना एक बड़ी चुनौती बन गया है। अनियमित दिनचर्या, गलत खान-पान, तनाव और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण अनेक बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। ऐसे में स्वस्थ जीवनचर्या अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। एक संतुलित और अनुशासित जीवनशैली न केवल शरीर को स्वस्थ रखती है, बल्कि मन को भी प्रसन्न और ऊर्जावान बनाती है।

- **संतुलित दिनचर्या का महत्व**

स्वस्थ जीवन की शुरुआत एक नियमित दिनचर्या से होती है। सुबह जल्दी उठना, समय पर सोना, नियमित रूप से भोजन करना और पर्याप्त विश्राम लेना शरीर की जैविक घड़ी को संतुलित रखता है। प्रात:काल का वातावरण शुद्ध और ऊर्जा से भरपूर होता है, इसलिए सुबह का समय व्यायाम, योग और ध्यान के लिए सर्वोत्तम माना जाता है।

- **फिटनेस और व्यायाम**

नियमित व्यायाम शरीर को सक्रिय और सशक्त बनाता है। प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट की शारीरिक गतिविधि - जैसे तेज़ चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना या योग इत्यादि हृदय को स्वस्थ रखती है और मोटापे को नियंत्रित करती है। योग और प्राणायाम न केवल शरीर को लचीला बनाते हैं, बल्कि मानसिक तनाव को भी कम करते हैं। फिटनेस केवल बाहरी सुंदरता नहीं, बल्कि आंतरिक स्वास्थ्य का प्रतीक है।

- **आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा**

आयुर्वेद हमारे प्राचीन ज्ञान की अमूल्य धरोहर है। यह शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर आधारित है। आयुर्वेद के अनुसार, भोजन ही सबसे बड़ी औषधि है। मौसमी फल-सब्जियों का सेवन, पर्याप्त पानी पीना और तैलीय एवं जंक फूड से परहेज करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। घरेलू नुस्खे और प्राकृतिक चिकित्सा छोटी-मोटी बीमारियों में प्रभावी सिद्ध होते हैं।

- **संतुलित खान-पान**

स्वास्थ्य का आधार सही आहार है। भोजन में प्रोटीन, विटामिन, खनिज, फाइबर और कार्बोहाइड्रेट का संतुलन होना चाहिए। अधिक चीनी, नमक और तेल का सेवन हानिकारक है। ताज़ा और घर का बना भोजन शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

- **मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक सोच**

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है। तनाव, चिंता और नकारात्मक सोच अनेक बीमारियों का कारण बन सकती है। नियमित ध्यान, सकारात्मक सोच, परिवार के साथ समय बिताना और अपने शौक पूरे करना मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

- **निष्कर्ष**

स्वस्थ जीवनचर्या अपनाना कोई कठिन कार्य नहीं है, बल्कि यह छोटे-छोटे अच्छे निर्णयों का परिणाम है। यदि हम अपनी दिनचर्या में अनुशासन, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सोच को स्थान दें, तो हम एक स्वस्थ, सुखी और सफल जीवन जी सकते हैं। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है, इसलिए आज से ही स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संकल्प लें।

■ ■

सफर, सुकून और सस्पेंसः '307.47' की अनोखी दुनिया

षीबा एस आर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
तिरुवनंतपुरम अंचल

मलयालम साहित्य की मुख्य धारा जहाँ वर्षों से यथार्थवाद, पारिवारिक ताने-बाने और सामाजिक विसंगतियों के इर्द-गिर्द घूमती रही है, वहीं आशिष बेन अजय की कृति '307.47' एक साहसिक और ताज़गी भरी हवा के झोंके की तरह सामने आती है। यह लेखक का पहला उपन्यास है, जिसकी विशेषता केवल इसका विषय नहीं, बल्कि इसे प्रस्तुत करने का अनूठा अंदाज़ भी है। लेखक स्वयं इसे "ट्रैवेलॉग फिक्शन" (यात्रा-वृत्तांत कथा) कहते हैं- एक ऐसी विधा जो मलयालम साहित्य में बहुत कम देखने को मिलती है। यही अनूठापन '307.47' को शुरुआत से ही पाठकों के लिए कौतूहल का विषय बना देता है।

लगभग 120 पृष्ठों का यह उपन्यास भले ही संक्षिप्त लगे, लेकिन इसका प्रभाव काफी गहरा है। इसकी सबसे बड़ी शक्ति इसका वातावरण है- वह धीरे-धीरे बढ़ता तनाव और सामान्य से दिखने वाले रास्तों में छिपी वह बेचैनी, जो यात्रा समाप्त होने के बाद भी पाठक का पीछा नहीं छोड़ती।

सहज शुरुआत से अंधकार की ओर कहानी का मुड़ाव बेहद सरल है- कुछ मित्र मुन्नार की यात्रा पर निकलते हैं। आमतौर पर ऐसे

कथानकों में हँसी-मज़ाक और प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन मिलता है। आशिष बेन अजय भी शुरुआती अध्यायों में इसी सहजता को अपनाते हैं। उनकी भाषा सरल है और विवरण इतने जीवंत हैं कि पाठक स्वयं को कार की पिछली सीट पर बैठा महसूस करने लगता है।

परंतु, जैसे-जैसे गाड़ी आगे बढ़ती है, कहानी का मिज़ाज बदलने लगता है। पहले एक हल्का-सा संदेह उभरता है, फिर एक अनकहा डर और अंततः वह भारी बेचैनी, जो सीधे पाठक के मन पर दस्तक देती है। घने जंगलों के बीच की सड़कें ज़रूरत से ज़्यादा शांत लगने लगती हैं और हवा का हर झोंका कोई गहरा रहस्य फुसफुसाता हुआ प्रतीत होता है। लेखक यहाँ अचानक किसी 'हॉरर' दृश्य का सहारा नहीं लेते, बल्कि डर को धीरे-धीरे 'पकने' देते हैं। यही 'स्लो-बर्न' इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

'कहानी के भीतर कहानी': एक रहस्यमयी संरचना

उपन्यास की संरचना काफ़ी दिलचस्प है। मुख्य पात्र को एक पांडुलिपि मिलती है, जिसमें किसी और का यात्रा-अनुभव दर्ज है। धीरे-धीरे पाठक को एहसास होता है कि उस लिखित अनुभव और वर्तमान यात्रा में डरावनी समानताएँ हैं।

यह 'मेटाफिक्शनल' तकनीक तीन स्तरों पर काम करती है:

1. **रहस्य की परतें :** पाठक एक साथ दो यात्राओं का गवाह बनता है, जिससे तनाव दोगुना हो जाता है।
2. **यथार्थ और कल्पना का मिलन :** क्या वह पांडुलिपि भविष्य का आईना है, या यह सब नायक के मन का वहम है? लेखक इन सवालों के जवाब देने के बजाय पाठक को उनके साथ अकेला छोड़ देते हैं।
3. **दार्शनिक गहराई :** यह संरचना संकेत देती है कि हर रास्ते की अपनी एक अनकही कहानी होती है, जिसे शायद हर कोई नहीं सुन पाता।

मनोवैज्ञानिक भय: जहाँ डर मन से उपजता है

यद्यपि कहानी में अलौकिक (Supernatural) संकेत मिलते हैं, लेकिन उपन्यास की असली ताकत मनोवैज्ञानिक भय है। लेखक यह बखूबी दिखाते हैं कि डर बाहरी दुनिया से ज्यादा मनुष्य के भीतर- अंधेरे, अनिश्चितता और एकांत में जन्म लेता है। मोबाइल नेटवर्क का गायब होना या वीरान सड़कें सिर्फ परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि पात्रों के मानसिक द्वंद्व का हिस्सा बन जाती हैं। पाठक बार-बार खुद से पूछता है- "जो हो रहा है क्या वह सच है, या सिर्फ एक भ्रम?"

शीर्षक '307.47': दूरी और प्रतीक का संगम

एक संख्यात्मक शीर्षक स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा जगाता है। उपन्यास में यह स्पष्ट होता है कि यह केवल किसी मील-पत्थर की दूरी नहीं है, बल्कि एक मानसिक यात्रा का पड़ाव भी है। यह उस बिंदु को दर्शाता है जहाँ भौतिक वास्तविकता और भय की सीमाएँ आपस में मिल जाती हैं।

भाषा और शैली: सरलता की शक्ति

एक नए लेखक के रूप में आशिष की भाषा सीधी और संवादपूर्ण है। यह सादगी जटिल कहानी को बोझिल होने से बचाती है और पाठक का जुड़ाव अंत तक बनाए रखती है। हालाँकि, कहीं-कहीं भाषायी अपरिपक्वता झलकती है, जो एक प्रथम प्रयास में स्वाभाविक है, पर यह कहानी के प्रवाह में बाधा नहीं बनती। प्रकृति यहाँ केवल एक बैकड्रॉप नहीं है, बल्कि एक जीवित पात्र की तरह व्यवहार करती है- जंगल और पहाड़ कभी आसरा देते हैं, तो कभी राक्षस की तरह डराते हैं।

एक बेचैन कर देने वाली समाप्ति

उपन्यास का अंत हर पाठक के लिए अलग अनुभव हो सकता है। जहाँ कुछ को इसका अधूरापन खटक सकता है, वहीं साहित्य के पारखियों के लिए यह 'ओपन एंडिंग' इसके मनोवैज्ञानिक स्वरूप के साथ पूरा न्याय करती है। यह अंत हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारे मन का अंधेरा उस जंगल के अंधेरे से कहीं अधिक घना है?

निष्कर्ष

'307.47' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि एक अनुभव है- सफ़र का, संदेह का और आत्म-चिंतन का। आशिष बेन अजय ने अपने पहले ही उपन्यास से यह साबित कर दिया है कि वे भविष्य में और भी जटिल एवं प्रभावशाली कथानक रचने की क्षमता रखते हैं।

लेखक के बारे में

आशिष बेन अजय न केवल एक प्रतिभाशाली लेखक हैं, बल्कि हमारे बैंक ऑफ़ इंडिया के अत्यंत सक्रिय और समर्पित सहयोगी भी हैं। अपने शांत, विनम्र और संतुलित व्यक्तित्व के लिए जाने जाने वाले अशिष हमेशा से विचारों की गहराई, रचनात्मक दृष्टिकोण और विश्लेषणात्मक सोच के प्रतीक रहे हैं। बैंकिंग के व्यवस्थित, गणनात्मक वातावरण में कार्य करते हुए भी उन्होंने साहित्य के प्रति अपने जुनून को कभी कम नहीं होने दिया।

उनकी शैली में एक विशेष शांत प्रवाह है- बिल्कुल उसी तरह, जैसे वे अपने पेशेवर जीवन में जटिल परिस्थितियों को सहजता से संभालते हैं। उनका उपन्यास '307.47' इस बात का प्रमाण है कि वे केवल एक कहानीकार नहीं, बल्कि अनुभवों को शब्दों में ढालने की अनूठी क्षमता रखते हैं। यात्रा और मनोवैज्ञानिक रहस्य को जोड़कर एक नई शैली प्रस्तुत करना उनके मौलिक विचारों और साहित्यिक साहस का उदाहरण है। बैंकिंग जैसे व्यस्त पेशे में रहते हुए ऐसा सृजन करना अनुशासन और जुनून- दोनों के संतुलन को दर्शाता है।

उपन्यास '307.47' उनके खुद के जीवन से संबंधित वास्तविक घटना पर आधारित है। उपन्यास के मुख्य पात्र सब हमारे ही बैंक के स्टाफ सदस्य हैं। आशिष और उनके मित्रों की एक सप्ताहांत मून्नार यात्रा और उसके दौरान घटी घटनाएँ इस उपन्यास का मूल आधार हैं।

एक सहकर्मी के रूप में हम सभी के लिए यह गर्व की बात है कि हमारे बीच ऐसा रचनात्मक और बहुआयामी व्यक्तित्व मौजूद है, जो पेशेवर रूप से उत्कृष्ट होने के साथ-साथ साहित्य में भी अपनी सशक्त पहचान बना रहा है। वर्तमान में आशिष बेन अजय हुबल्ली-धारवाड़ अंचल के कड़ोली (बेलगाम) शाखा में कार्यरत हैं।

कहानी

परोपकार

सरिता वैश्य
अधिकारी
सामान्य परिचालन विभाग
उज्जैन अंचल

शोभा और सुधा दो बहनें थीं। दोनों आपस में हमेशा झगड़ती रहती थीं। उनके माता-पिता इस बात को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे कि आखिर इन दोनों में मेल कैसे कराया जाए। दोनों बहनें एक-दूसरे के स्वभाव से बिल्कुल विपरीत थीं। एक को बनाना पसंद था, तो दूसरी को बिगाड़ना।

परंतु एक बात जो दोनों में समान थी, वह थी परोपकार की भावना। भले ही वे आपस में झगड़ती रहती थीं, लेकिन किसी भी जीव या मनुष्य को दुख में देखकर उनके भीतर दया की भावना जाग उठती थी। वे हमेशा आगे बढ़कर दूसरों की मदद करती थीं।

एक दिन दोनों बहनें स्कूल से वापस आ रही थीं। पूरे शहर में तेज़ बारिश हो रही थी। बारिश में भीगने के कारण उन्होंने अपनी स्कूल वैन भी मिस कर दी। अब दोनों एक ही छाते में घर की ओर जा रही थीं और आपस में झगड़ भी रही थीं। तभी अचानक उन्हें "कूँ-कूँ" की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने चारों ओर देखा, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। थोड़ा आगे बढ़ने पर फिर वही आवाज़ सुनाई दी।

यह आवाज़ पार्क में झूले के पास से आ रही थी। ध्यान से देखने पर उन्हें पता चला कि कुत्ते का एक छोटा-सा पिल्ला, जो शायद अपनी माँ से बिछड़ गया था, कीचड़ में फँसा हुआ था और निकलने की कोशिश करते हुए आवाज़ कर रहा था। दोनों बहनें दौड़कर उसकी ओर गईं। शोभा ने जल्दी से उसे अपनी गोद में उठा लिया। काफी देर तक संघर्ष करने के कारण वह सुस्त पड़ गया था। उसकी छोटी-छोटी गोल-सी आँखें बंद हो गई थीं।

सुधा ने कहा, "जल्दी घर चलो, इसे लेकर। बेचारा बहुत भीग गया है।"

घर पहुँचते ही दोनों बहनों ने अपने बस्ते एक तरफ रख दिए और तौलिया लेकर उसे सुखाने में लग गईं। उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि वे खुद भी बारिश में भीगी हुई हैं।

माँ ने आकर पूछा, "अरे, यह कौन है?"

सुधा ने पूरी घटना माँ को बताई और उसे अपने साथ रखने की बात कही। माँ ने पहली बार देखा कि दोनों बहनें किसी एक बात पर सहमत हैं, तो वे कैसे मना करतीं?

माँ ने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या नाम रखा है तुमने अपने नए मेहमान का?" शोभा ने झट से कहा, "हम इसका नाम 'बडी' रखेंगे, क्योंकि यह हमारा नया दोस्त है।"

अब शोभा का काम था बडी को टहलाने ले जाना और सुधा का काम था उसके खाने-पीने का ध्यान रखना। दोनों के बीच झगड़े कम हो गए थे और अगर कभी होते भी, तो इस बात पर कि बडी के साथ कौन खेलेगा। स्कूल के बाद का समय अब वे अक्सर बडी के साथ बिताने लगीं। बडी भी उनके घर का अभिन्न हिस्सा बन गया था। जैसे ही उनके स्कूल से आने का समय होता, वह हल्की-सी आहट सुनकर भी दरवाज़े की ओर भागता।

कुछ दिनों बाद बडी अचानक बीमार हो गया। सुधा और शोभा के लिए यह बहुत दुखद घटना थी। मानो उनकी सारी खुशियाँ बिखर गई हों। दोनों बहनें रात में बीच-बीच में उठकर देखतीं कि वह ठीक तो है। कुछ दिनों की देखभाल के बाद बडी ठीक हो गया। साथ ही एक और परिवर्तन भी हुआ - दोनों बहनें एक-दूसरे के और भी करीब आ गईं। अब यह नन्हा मेहमान उनकी ज़िंदगी का अटूट हिस्सा बन चुका था। इस प्रकार परोपकार की भावना ने दोनों बहनों के आपसी बैर को समाप्त कर प्रेम की भावना को जगा दिया।

■ ■

आधी चाय और पूरा सपना

नीतू सिंह
मुख्य प्रबंधक-आईटी एवं संकाय
प्रबंधन विकास संस्थान
सीबीडी बेलापुर
नवी मुंबई

सुबह की ठंडी हवा में मोहल्ले की चाय की दुकान खुल चुकी थी। टीन की छत, लकड़ी की बेंच और एक कोने में रखा पुराना केतलीदान। वहीं बैठा था गोलू। उम्र अठारह साल, कद थोड़ा छोटा, पर आँखों में बेचैनी बहुत बड़ी। वह रोज़ यहाँ आता था, एक ही ऑर्डर देता था- "चाचा, आधी चाय।"

चायवाले चाचा मुस्कुराकर कहते, "बेटा, आधी चाय से पेट नहीं भरता।"

गोलू हँस देता, "पेट नहीं, सपना भरना है चाचा।"

गोलू के पिता रिक्शा चलाते थे और माँ दूसरों के घरों में झाड़ू-पोंछा करती थीं। घर छोटा था, पर हालात उससे भी छोटे। गोलू पढ़ना चाहता था। किताबें उसे अच्छी लगती थीं। किताबों से उसे लगता था जैसे कोई उससे कह रहा हो- "तू भी कुछ बन सकता है।"

पर पढ़ाई सस्ती चीज़ नहीं थी। कॉलेज की फीस, फॉर्म, कॉपी - सब पैसे माँगते थे। गोलू ने तय किया कि वह खुद कमाएगा। सुबह अख़बार बाँटता, दोपहर को दुकान पर सामान उठाता और शाम को इसी चाय की दुकान पर गिलास धोता। बदले में चाय और कभी-कभी दो बिस्कुट मिल जाते।

एक दिन कॉलेज में नोटिस लगा-"जिला स्तरीय लेख प्रतियोगिता। विजेता को स्कॉलरशिप।" गोलू ने नोटिस ऐसे देखा जैसे किसी ने अँधेरे कमरे में दीया जला दिया हो। उस रात वह देर तक जागता रहा। छत की दरारों से तारे दिख रहे थे। माँ ने पूछा, "नींद नहीं आ रही?"

गोलू बोला, "माँ, अगर मैं जीत गया तो फीस भर जाएगी।"

माँ ने सिर सहलाया, "और अगर नहीं जीता?"

गोलू चुप हो गया। माँ ने खुद जवाब दिया, "तो भी तू मेरा बेटा रहेगा।"

गोलू लिखता अच्छा था। उसकी भाषा बड़ी-बड़ी नहीं थी, पर सच्ची थी। वह वही लिखता था जो देखता था। अगली कई रातें उसने लिखते हुए काट दीं। कभी शब्द नहीं मिलते, तो वह दुकान पर बैठकर लोगों को देखता। कोई मज़दूर चाय में ज़्यादा शक्कर माँगता, कोई साहब बिना पैसे दिए निकल जाता। गोलू सब नोट करता-दिल में।

प्रतियोगिता के दिन कॉलेज का हॉल भरा हुआ था। बड़े-बड़े स्कूलों के बच्चे आए थे। किसी के पास चमकता पेन था, किसी के पास महँगी डायरी। गोलू के पास एक सस्ता-सा नीला पेन था, जिसे वह रोज़ संभालकर रखता था। विषय था- "मेरी सबसे बड़ी सीख।"

सब लिखने लगे। गोलू ने पेन उठाया, फिर रखा। उसे किताबों वाली सीख याद नहीं आ रही थी। उसे याद आ रही थी - आधी चाय। वह लिखने लगा- "मैंने सीखा है कि जिंदगी में हर किसी को पूरी चाय नहीं मिलती। किसी को आधी मिलती है, किसी को ठंडी। पर जो आधी चाय में भी उम्मीद ढूँढ ले, वही आगे बढ़ता है। मैंने सीखा है कि शर्मिंदा होने से अच्छा है मेहनत करना। और माँ की चुप्पी में भी हौसला छुपा होता है।"

तीन घंटे कब बीत गए, पता ही नहीं चला। नतीजे आने में समय था। गोलू फिर अपने काम में लग गया। एक शाम चाय की दुकान पर कुछ लड़के हँस रहे थे। कह रहे थे, "अरे, लिखकर क्या मिल जाएगा? नौकरी तो पहचान से मिलती है।"

गोलू ने पहली बार जवाब दिया, "पहचान भी कहीं से शुरू होती है।"

उस रात तेज़ बारिश हुई। दुकान की छत से पानी टपकने लगा। चाचा परेशान थे। गोलू ने अपने हाथों से छत पर प्लास्टिक डाल दी।

चाचा बोले, "तू चाहे तो कहीं और काम ढूँढ ले।"

गोलू बोला, "नहीं चाचा, ये जगह मेरी है।"

अगले दिन कॉलेज से फोन आया। गोलू को बुलाया गया था। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। वह माँ को कुछ कहे बिना निकल पड़ा। हॉल में निर्णायक बैठे थे। एक ने कहा, "तुम्हारी भाषा साधारण है, पर तुम्हारी बात असली है।"

दूसरे ने कहा, "तुम पहले स्थान पर नहीं आए।" गोलू की साँस अटक गई।

फिर तीसरे ने मुस्कुराकर कहा, "पर तुम्हें विशेष पुरस्कार दिया जा रहा है।"

स्कॉलरशिप पूरी नहीं थी, पर शुरुआत के लिए काफ़ी थी। गोलू की आँखें भर आईं। उसने सोचा– आज आधी चाय पूरी लग रही है। घर लौटकर उसने माँ को काग़ज़ थमा दिया। माँ ने पढ़ा नहीं, बस सीने से लगा लिया। बोली, "मेरे लिए तू पहले ही जीत चुका था।"

कुछ महीने बाद गोलू ने चाय की दुकान पर एक बोर्ड टाँग दिया -

"यहाँ आधी चाय भी मिलती है।"

लोग हँसते, पूछते-क्यों?

गोलू कहता, "क्योंकि हर किसी की जेब एक जैसी नहीं होती।"

आज गोलू पढ़ रहा है। बहुत बड़ा आदमी नहीं बना है, पर उसने हार मानना छोड़ दिया है। उन्हें पता चला कि ज़िंदगी में सब कुछ एक साथ नहीं मिलता। कभी आधी चाय से काम चलाना पड़ता है और आख़िर में बस इतनी-सी बात, अगर हालात नाजुक हैं, तो सपने छोटे मत करो। अगर साधन कम हैं, तो हिम्मत पूरी रखो। लोग कहेंगे कि इससे कुछ नहीं होगा। वही लोग तब तालियाँ बजाएँगे, जब हो जाएगा।

तुम अपनी आधी चाय शर्म से नहीं, हौसले से पियो। क्योंकि एक दिन वही आधी चाय तुम्हें पूरी ज़िंदगी जीना सिखा देगी।

"आधी चाय में देखा मैंने पूरा जहाँ,
कम साधन में भी, पलता है बड़ा अरमान।
लोग हँसें तो हँसने दो, रुकना मत यार,
मेहनत चुपचाप करती है जीत का इज़हार।
जो आज झुका नहीं, हालात की मार से,
कल वही चमकता है, अपनी पहचान से।"

■■

ग्राहक

आज हमें ये ज्ञात हुआ है,
कि हमारे सपनों के साथ विश्वासघात हुआ है।
हमने सुना था, बैंक की नौकरी का अपना ही जुनून है,
इसमें ढेर सारी इज़्ज़त, पैसा और सुकून है।
वो ज़माना कुछ ओर था,
जब बैंक वालों का दौर था।
ये उन दिनों की बात थी,
जब बैंक के बाबू की भी गज़ब औकात थी।
फिर हमने भी सपना देख लिया था,
बैंक की परीक्षा पास करने के लिए दिन-रात एक किया था।
आख़िर हमें भी तो इज्जत और नाम कमाना था,
सच मानिए बस किसी भी तरह बैंक में आना था।
लेकिन हम भी उस पीढ़ी के युवा थे,
जिन्हें पहचान से बैंकों में काम नहीं मिला था।
अपनी काबिलियत से आई.बी.पी.एस के रिजल्ट में नाम दिखा था।
हमें तो बैंक की पंचलाइन से भी प्यार हुआ था,
रिश्तों की जमापूँजी से जुड़ने का बुखार हुआ था।
फिर वो दिन भी आया, जब हमने अपने सपने की ओर
अपना पहला कदम बढ़ाया।
बैंक और ग्राहक सेवा में इतना मन लगाया,
कि अपने बारे में फिर कभी ख्याल ही नहीं आया।
सच बोलना, चापलूसी से बचना,
ऐसी अच्छी-अच्छी शिक्षा जो हमने पाई थी,
पता चला बैंकिंग में उन सब की मनाही थी।
बचपन में निडर होकर सच बोलने पर,
हमने जो तारीफें पाई थीं।
सच मानिए बैंक में इसी खूबी ने,
हमें बहुत डाँट पड़वाई थी।
जिस सम्मान और पहचान के लिए, हम बैंक में आए थे,
सबसे पहले हमने, इन्हें ही गवांया था,
जब सही होने पर भी, गलत ग्राहक के आगे सर झुकाए थे।
हम भूल गए थे कि आत्मसम्मान भी कुछ होता है,
क्योंकि आज की बैंकिंग में "देवता तो बस ग्राहक होता है"

कल्याणी मालवीय
अधिकारी
रामचंद्र नगर शाखा
इंदौर अंचल

बरसो पानी

इन्द्रा सिंह
अधिकारी
हजारीबाग अंचल

तारीख थी 15.11.2025, दिन शनिवार। उस शनिवार की सुबह कुछ अलग थी। ठंडी-सी हवा, हल्का-सा कोहरा और मन में अनजाना-सा उत्साह; जैसे प्रकृति स्वयं किसी नई राह पर निकल पड़ने का निमंत्रण दे रही हो। मैं और मेरे साथ तीन साथी हजारीबाग का प्रसिद्ध और रहस्यमय स्थल "बरसो पानी" की यात्रा पर निकल पड़े थे। यह जगह बड़कागाँव से आगे घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच कहीं छिपी हुई है - किसी पुरानी लोककथा की तरह।

हजारीबाग से निकलते ही रास्ता हरियाली से घिर गया। सड़कें कभी सीधी, कभी मोड़दार थीं और सड़क के दोनों तरफ साल, सखुआ और महुआ के ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे, जो मानो हमारे स्वागत के लिए ही खड़े हों। कभी-कभी पहाड़ियों के बीच से सूरज की किरणें छनकर आतीं और पूरा जंगल सुनहरा हो उठता। बड़कागाँव पहुँचकर हमने थोड़ी देर के लिए वहाँ गाड़ी रोकी और चाय पी। वहीं के एक स्थानीय व्यक्ति से आगे का रास्ता पूछा। उसने मुस्कुराकर प्रतिउत्तर में पूछा -

"बरसो पानी जा रहे हैं?"

हमारे 'हाँ' कहते ही वह बोला -

"ताली बजाइएगा तो पानी बरसेगा।"

हम सब एक-दूसरे को देखकर हँस पड़े।

अब सड़क धीरे-धीरे कच्चे रास्तों में बदल चुकी थी। थोड़ी चढ़ाई, थोड़े पत्थर और आसपास जंगल की गहरी चुप्पी... कभी-कभी पक्षियों की आवाज और पत्तों की सरसराहट इस सन्नाटे को तोड़ देती। लगभग 500 मीटर पैदल चलने के बाद सामने एक चट्टानी ढलान दिखी - यही था बरसो पानी।

गुफा के पास पहुँचते ही हवा में नमी-सी महसूस हुई। चट्टान में भी नमी दिख रही थी, लेकिन पानी की बूँदे टपक नहीं रही थीं। जगह ज्यादा बड़ी नहीं थी, लोग भी बहुत कम थे - वातावरण में एक रहस्यमयी शांति थी।

फिर वह क्षण आया, जिसके लिए हम इतना सफर कर आए थे।

मैंने ताली बजायी - एक बार, फिर दो बार... फिर बार-बार...

अचानक ऊपर की चट्टानों से पानी की बूँदें तेजी से गिरने लगीं, मानो प्रकृति ने अदृश्य नल खोल दिया हो।

हम सब स्तब्ध थे। स्थानीय लोग इसे वर्षों से देखते आ रहे हैं, पर आज तक विज्ञान भी इसका स्पष्ट कारण नहीं बता पाया है। हम वहीं खड़े इस प्राकृतिक रहस्य को बस महसूस करते रहे।

ठंडी-ठंडी बूँदें चेहरे पर पड़तीं और जैसे मन की सारी थकान धो ले जातीं।

हमने वहाँ बहुत सारी तस्वीरें खींचीं। कुछ देर बाद हम गुफा से बाहर आए। सामने पहाड़ियों पर धूप फैल चुकी थी। हवा हल्की ठंडी थी और जंगल की मिट्टी से ताज़ी सुगंध उठ रही थी।

मन को लगा; कुछ यात्राएँ सिर्फ रास्तों में नहीं, बल्कि भीतर भी घटती हैं।

बरसो पानी सिर्फ एक जगह नहीं... यह प्रकृति की एक मुस्कान है... एक रहस्य... एक अनुभव...

जो आपको भीतर से नया कर देता है।

■ ■

कैशलेस अर्थव्यवस्था - अवसर और चुनौतियां

कुमारी जिम्मी
अधिकारी
फुसरो बाजार शाखा
बोकारो अंचल

भारत और दुनिया दोनों जगह एक बात धीरे-धीरे साफ होती जा रही है कि भविष्य नकदी पर नहीं बल्कि डिजिटल तरीकों पर टिका है। कैशलेस अर्थव्यवस्था का विचार कभी सिर्फ एक आधुनिक अवधारणा माना जाता था लेकिन आज यह कई देशों की नीतियों का केंद्रीय लक्ष्य है। स्वीडन, डेनमार्क और बेल्जियम जैसे देश तो कागजी मुद्रा पर निर्भरता काफी हद तक कम कर चुके हैं लेकिन भारत की कहानी बिल्कुल अलग है। यहाँ जनसंख्या काफ़ी अधिक है, सामाजिक-आर्थिक विविधता अत्यधिक है और लंबे समय तक नकद प्रधान लेन-देन ही सामान्य रहे हैं। सरकारी नीतियों ने इस बदलाव को जमीन दी। डिजिटल इंडिया, कैशलेस इंडिया जैसे अभियान यूपीआई(UPI), एईपीएस(AEPS), भीम(BHIM), एनईएफटी(NEFT), यूएसएसडी(USSD) और मोबाइल बैंकिंग जैसी प्रणालियां इन सभी ने मिलकर लाखों लोगों को औपचारिक वित्तीय तंत्र से जोड़ा।

- **'कैशलेस' की आवश्यकता क्यों है -**

कैशलेस अर्थव्यवस्था का आशय 'पूरी तरह बिना नकदी' (Zero cash) नहीं है बल्कि इससे तात्पर्य है कि अधिकांश भुगतान डिजिटल माध्यमों जैसे यूपीआई, कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, वॉलेट, एईपीएस(AEPS) आदि के माध्यम से किए जाए और नकद का उपयोग अपेक्षाकृत कम हो। यह परिवर्तन मुख्यत: तीन उद्देश्यों पर आधारित है -

(i) काले धन पर नियंत्रण
(ii) लेने-देन में पारदर्शिता एवं टैक्स अनुपालन को सुदृढ़ करना
(iii) रोजमर्रा के भुगतान को तेज, सरल और कम लागत वाला बनाना।

- **कैशलेस होने पर मिलने वाला अवसर -**

(i) गति, सुविधा और सरलता :- यूपीआई तथा अन्य वास्तविक समय भुगतान प्रणालियों 24×7 लेन-देन की सुविधा देती है, जिससे नकदी संभालने की आवश्यकता घटती है, लाइनों का बोझ कम होता है और छोटे से छोटे भुगतान भी तुरंत पूरे किए जा सकते हैं।

(ii) लागत में बचत, बेहतर पारदर्शिता और अधिक दक्षता:- भारत की नगदी प्रधान प्रणाली पहले महंगी पड़ती थी। "कॉस्ट ऑफ कैश इन इंडिया" अध्ययन के अनुसार आरबीआई और बैंक हर वर्ष लगभग ₹21000 करोड़ मुद्रा छपाई, परिवहन और प्रबंधन पर खर्च करते थे। डिजिटल भुगतान से यह बोझ काफी कम होता है। डिजिटल लेन-देन एक स्पष्ट रिकॉर्ड छोड़ते हैं, जिनसे टैक्स अनुपालन मजबूत होता है और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का दायरा घटता है।

(iii) बड़े पैमाने पर वित्तीय समावेशन:- यूपीआई के सरल इंटरफेस, क्यूआर(QR) कोड की व्यापक उपलब्धता, बहुभाषी समर्थन और एईपीएस(AEPS) जैसी सुविधाओं ने पहली बार उपयोग करने वालों तक पहुंच आसान बनाई है। यहां तक कि इंटरनेट न होने पर भी यूएसएसडी(USSD) और ऑफलाइन ढांचा सहायक है।

(iv) नवाचार और वैश्विक पहुंच:- यूपीआई में यूपीआई लाइट, क्रेडिट ऑन यूपीआई, डेलीगेटेड पेमेंट्स जैसे नवीन फीचर लगातार जुड़ रहे हैं। भारत ने यूपीआई को अन्य देशों तक पहुंचाने और क्रॉस-बॉर्डर उपयोग हेतु साझेदारियां बढ़ाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

- **चुनौतियाँ -**

(i) डिजिटल विभाजन और कनेक्टिविटी की असमानता- भारत के सभी जिलों में नेटवर्क गुणवत्ता, स्मार्टफोन पहुंच और डिजिटल अवसंरचना समान नहीं है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी फीचर फोन आधारित उपयोगकर्ता बड़ी संख्या में हैं। ऐसी स्थिति में USSD99# और आरबीआई का ऑफलाइन भुगतान ढांचा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(ii) साइबर सुरक्षा, धोखाधड़ी और उपभोक्ता संरक्षण:- डिजिटल लेन-देन बढ़ने के साथ ही फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग और मैलवेयर हमलों जैसी धोखाधड़ी भी तेजी से बढ़ी है। आरबीआई के साइबर रेजिलेंस एंड डिजिटल पेमेंट सिक्योरिटी कंट्रोल्स (2024) दिशानिर्देशों ने नॉन बैंक PSO के लिए गवर्नेंस, मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA), सिक्योरिटी ऑपरेशन सेंटर (SOC), घटना रिपोर्टिंग और वेंडर रिस्क प्रबंधन को सुदृढ़ किया है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2025 में डिजिटल भुगतान से जुड़े 56.5% धोखाधड़ी के मामले सामने आए, जबकि धोखाधड़ी की कुल राशि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इससे स्पष्ट है कि तकनीकी सुरक्षा के साथ-साथ उपयोगकर्ता जागरूकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

(iii) अंतिम छोर के व्यापारी (मर्चेंट) और उनकी आर्थिक चुनौतियां:- किराना दुकानों और छोटे व्यापारियों को क्यूआर/पीओएस(QR/POS) ऑनबोर्डिंग लागत, चार्जबैक व विवाद समाधान की प्रक्रिया तथा सेटलमेंट में देरी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, आरबीआई का पेमेंट्स इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलेपमेंट फंड (PIDF) और बढ़ता यूपीआई क्यूआर(QR) नेटवर्क व्यापारी स्वीकरण को व्यापक बना रहा है, लेकिन व्यापारियों को प्रशिक्षण, सरल ऑनबोर्डिंग और शिकायत समाधान की मजबूत व्यवस्था अभी भी सतत प्रयास की मांग करती है।

(iv) व्यवहारगत परिवर्तन और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भरोसा:- डिजिटल बैंकिंग या विकल्प की दीर्घकालिक आदत बनाने के लिए लगातार भरोसेमंद अनुभव, सरल इंटरफेस, स्थानीय भाषाओं में सहायता और प्रथम बार उपयोगकर्ताओं के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता है। भारत का FI-इंडेक्स मार्च 2025 में 67.0 तक पहुंचना उत्साहजनक है परंतु डिजिटल उपयोग की गुणवत्ता और निरंतरता को बढ़ाने पर अभी और कार्य करने की आवश्यकता है।

(v) प्रणालीगत जोखिम और भुगतान तंत्र का लचीलापन:- रिइंडेंट सिस्टम उच्च अपटाइम, मजबूत ODR (Online Dispute Resolution) कार्ड टोकनाइजेशन और कार्ड ऑन फाइल टोकन, ये सभी जोखिमों को कम करने में सहायक है। आरबीआई के अनुसार दिसंबर 2024 तक 91 करोड़ से अधिक टोकनाइज्ड कार्ड बनाए जा चुके थे, जो सुरक्षा को मजबूत बनाते है।

निष्कर्ष : यदि हम भारत की बैंकिंग प्रणाली की बात करें तो आज वो केवल वित्तीय सेवाओं तक सीमित नहीं है, यह देश की आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार बन चुकी है। तकनीकी परिवर्तन विशेषकर डिजिटल भुगतान, मोबाइल बैंकिंग और रियल टाइम फंड ट्रांसफर ने पूरे बैंकिंग तंत्र को बदल दिया है। कोरोना महामारी (2020) के बाद डिजिटल भुगतान में तेजी से उछाल आया और समय के साथ व्यापक इंटरनेट सेवाओं व नेटवर्क कवरेज ने इस परिवर्तन को और मजबूती दी। इससे क्यूआर(QR) सहित डिजिटल लेन-देन में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

हालांकि, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, धोखाधड़ी के बढ़ते मूल्य, सीमित डिजिटल साक्षरता और ग्रामीण कनेक्टिविटी जैसे मुद्दे अभी भी चुनौतियां बने हुए हैं फिर भी डिजिटल अवसंरचना, उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव और नीतिगत समर्थन भारत को कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं।

■■

चित्र काव्य प्रतियोगिता - 8

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली कविता, अधिकतम 50 शब्दों में लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.bank.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ 04 कविताओं के रचयिताओं का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ़ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

चित्र काव्य प्रतियोगिता - 7 के विजेता

आशा की नई किरण...

हार गया मत मान तू, जीवन अभी न बिखरा,
मौन खड़ा वह ठूंठ भी, आशा बनकर उभरा,
छोटे-छोटे कदम भी, नई इबारत लिखेंगे,
सूखे ठूंठ से फिर वो, बन कोपल खिलेंगे,
विपदा कितनी हो बड़ी, तनिक न तू डिगना,
थमे हुए क्षितिज पर भी, तू सूरज-सा चमकना।

गायत्री राव
ऋण निगरानी विभाग
फील्ड महाप्रबंधक कार्यालय
भोपाल

रिश्तों की जमापूँजी

ठूँठ बेजान सही, पर मज़बूत आधार है,
बीते कल के अनुभवों का संचित विस्तार है।
सूखी छालों ने अंकुर में नई जान फूँकी है,
यह विरासत ही धरोहर की सच्ची पूँजी है।
अंत विराम नहीं, अटूट नातों का आगाज़ है,
शून्य से सृजन तक का यही शाश्वत अंदाज़ है।

अमित कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक
सतर्कता विभाग
मुंबई दक्षिण अंचल

वृक्ष की कथा

उगता हूँ कटने के बाद भी
फिर आ सकूँ लोगों के काम
कभी कागज बन,
कभी तीर बन
कभी धनुष बन,
कभी सुख-साधन बन
कभी जलावन बन,
पेट की जलन बुझाता हूँ
और हरा-भरा रह,
जीवन को प्राण दे जाता हूँ
पर फिर भी काटा जाता हूँ।

नीता आश
प्रबंधक
सामान्य परिचालन विभाग
बोकारो अंचल

अटूट जिजीविषा

ठूंठ हुआ जो कल तक तना,
आज नई कोपल मुस्काई।
पतझड़ की यादें मिटाकर,
जीवन की फिर ऋतु आई।
अंत नहीं है अंत कभी भी,
धैर्य और विश्वास रहे,
सूखी लकड़ी भी जी उठती,
गर मन में कुछ खास रहे।

सुनील कुमार सेठी
ग्राहक सेवा सहयोगी
बारिपदा अंचल

वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा पुरस्कार

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा दिनांक 9 व 10 अप्रैल 2026 को उदयपुर में आयोजित राजभाषा सेमिनार में वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान "ख" क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु बैंक ऑफ़ इंडिया को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आशीर्वाद भाषा - सेतु पुरस्कार

आशीर्वाद सामाजिक संस्था, मुंबई द्वारा दिनांक 24 फरवरी 2026 को मुंबई में आयोजित 33वें आशीर्वाद भाषा - सेतु पुरस्कार समारोह में भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया को "उत्कृष्ट राष्ट्रीयकृत बैंक 2025" एवं बैंक की हिंदी गृहपत्रिका 'बीओआई वार्ता' को "श्रेष्ठ गृहपत्रिका" पुरस्कार प्राप्त हुआ।

बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़े का आयोजन

मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़े के उपलक्ष्य में इस वर्ष बैंक ऑफ़ इंडिया के प्रधान कार्यालय एवं महाराष्ट्र राज्य स्थित अंचलों (पुणे, नासिक, कोल्हापुर, नवी मुंबई, नागपुर, मुंबई दक्षिण, सोलापुर, विदर्भ) में "मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा" का आयोजन किया गया।

इस पखवाड़े के अंतर्गत विविध साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया जिनमें कहानी/संस्मरण लेखन, निबंध लेखन, अभिव्यक्ति प्रतियोगिता, अधूरी कहानी पूरी करो प्रतियोगिता, काव्य पाठ, समाचार वाचन एवं सुलेख प्रतियोगिता शामिल थीं। इन सभी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की एवं इन्हें सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रधान कार्यालय

कोल्हापुर

नवी मुंबई

नागपुर

पुणे

मुंबई दक्षिण

विदर्भ

सोलापुर

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2024-25

गोवा आंचलिक कार्यालय

पुणे आंचलिक कार्यालय

नागपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक)

मुजफ्फरपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अतुलनीय नारी

कु. अलंकृता मालवीय
सुपुत्री आशीष कुमार मालवीय,
वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय,
एसटीसी नोएडा